जंगलमे एक राति

लीलावती भागवत

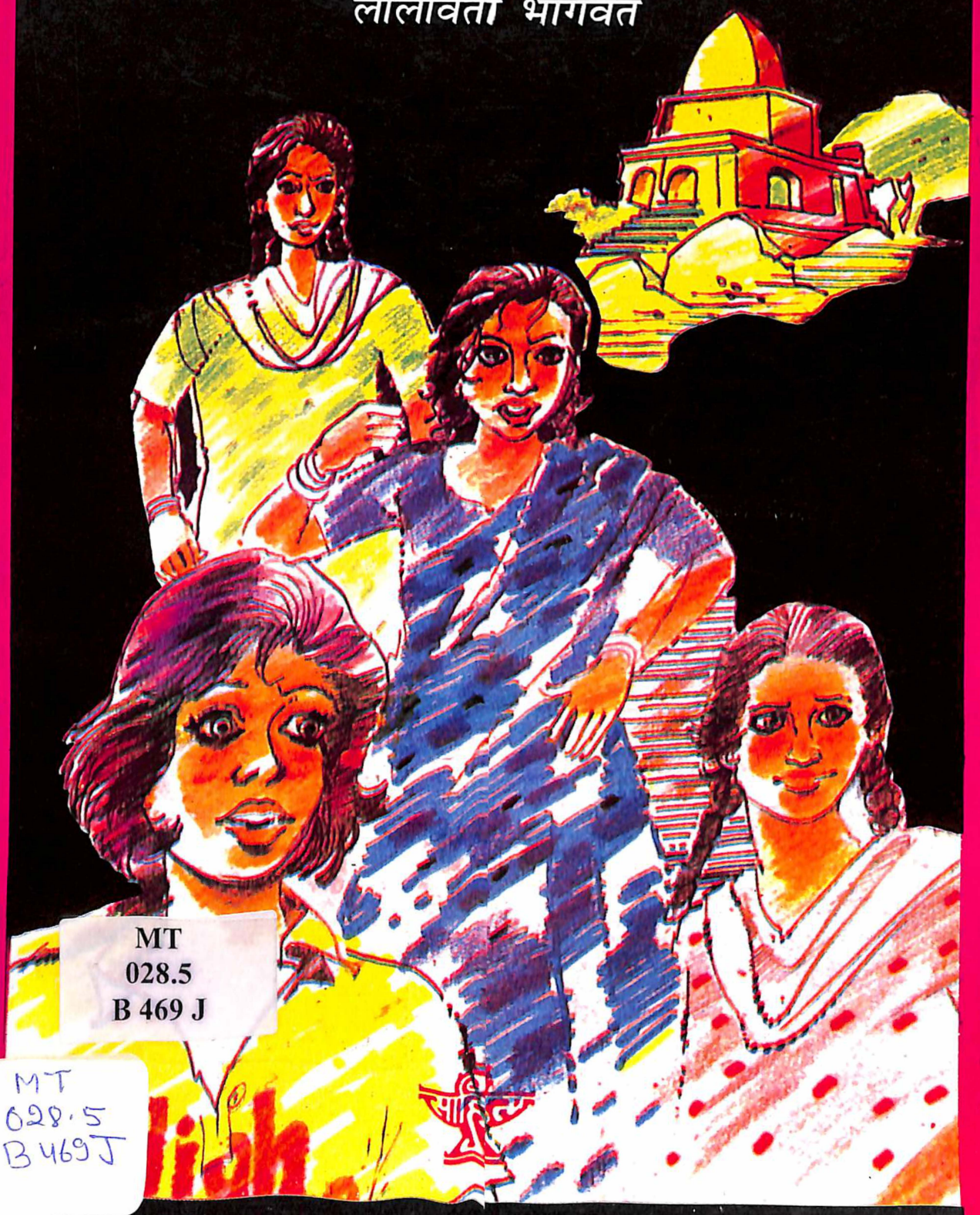

MT
028.5
B 469 J

MT
028.5
B 469 J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

जंगलमे एक राति

जंगलमे एक राति

लीलावती भागवत

मैथिली अनुवाद
सुरेश्वर झा

रेखांकन
सुबीर राय

साहित्य अकादेमी

Jangal Me Ek Raati : Maithili translation by Sureshwar Jha of Leelawati Bhagawat's Children fiction *Ranatali Raat* in Marathi, Sahitya Akademi, New Delhi (1998), Rs. 40

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 028.5 B 469 J
00117113

प्रथम संस्करण 1998

साहित्य अकादेमी

मुख्य कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

बिक्री केन्द्र

स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

प्रादेशिक कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल,
23ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता 700 053

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग,
दादर, मुम्बई 400 014

गुना बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
304-305, अन्ना सालई, तेनामपेट,
चेन्नई 600 018

ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे.सी. मार्ग,
बंगलौर 560 002

MT
028.5
B469 J

ISBN 81-260-0306-3

मूल्य : चालीस टाका

मुद्रक : सविता प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली 110 032

Indian Institute of Advanced Study
117113
9.12.04
SHIMLA

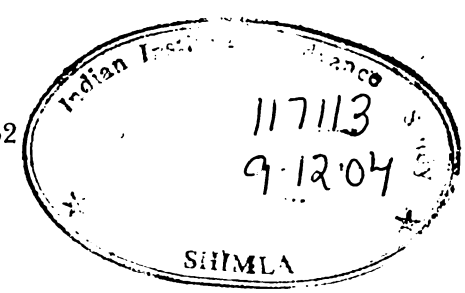

पातालेश्वर

नहि जानि केहेन हेतैक पातालेश्वर ? की पहाड़ीक खाधिमे हमरालोकनि उतरि सकब ? बम्बइ फिरलापर जखन वर्ग सभ लड़कीकेँ एहियात्राक विषयमे कहबैक तँ ओ सभ सत्ते आकर्षित भऽ उठत...

मीनाक माथपर भोरेसँ पातालेश्वर जयबाक धुनि सबार छलैक। ओ कोनो बात पर सोचिये ने पबैत छलि, नहि जानि कखन घड़ीमे दू बजतैक ! ओकर बेकलता देखि मौसी कहबो केलकैक, "मीना ठीकसँ खा तँ ले। पातालेश्वर दूर छैक, पयरे चलि कऽ जयबाक लेल सामार्थ्यो तऽ चाही...।"

अंत मे बैसकक कोठलीसँ दू बजबाक सूचना भेटलैक आ' ओ देखलक जे गौतमी मुहँपर ठाढ़ि अछि।

"तोँ तैयार छेँ ने मीना ?"

"हँ, मुदा तोँ असगरे ? की यमू संग नहि अयलौक ?"

"यमूक घर तँ बाटे पर छैक। जयबाकाल ओकरा संग कऽ लेबैक।"

"ठीक, चल। चल स्वाती। अच्छा मौसी हम सभ जाइत छी।"

"मीना पानिक बोतल लऽ ले ने ? आ' भेलपुड़ीक पोटरी ?"

"सभ किछु ल लेलहुँ अछि मौसी। तोँ चिंता जनि कर। कहैं तऽ तोरालेल पातालेश्वरक झरनासँ ठंढ़ा पानि एहि बोतलमे भरि कऽ नेने अयबौक ?" ई कहि खिलखिलाइत ओ तीनू छौंड़ी चलि पड़ल। यमू सेहो तैयार भऽ कखन सँ ने एकरा सभहिक प्रतीक्षा मे ठाढ़ि छलैक। एकरा सभक अबिते ओ अपन मायकेँ प्रणाम कऽ हाथ मे चारि गोट लाठी उठैलक आ ओकरा सबहिक संग बिदा भऽ गेलि।

"हँ, ई लऽ ले, एक-एकटा लाठी सभगोटे अपना हाथमे लऽ ले।"

"यमू, ई केहेन लाठी छैक?'' अचंभित होइत पुछलकैक स्वाति।

"लाठी नहि, ई लठ छिएक, आ बबूरक डाढ़िसँ बनल छैक।''

"बबूरक ? मुदा एहिमे तँ काँट नहि छैक।''

"काँट जँ रहितैक तँ हमरा सभक हाथ मे ओ गड़ितय नहि ? हम काँट सभकेँ घसि-घसि कऽ हटा देलिऐक अछि।''

ओ चारू गोटे पातालेश्वर दिस जाइवला सड़क पर चलऽ लागलि। जाबत कालधरि ओसभ गामक बीच बाटे चलैत रहलि ताबत अपन घर, स्कूल तथा सखी-सहेलीक विषयमे गप करैत रहलि। आस्ते-आस्ते गाम पाछू छूटि गेलैक आ' ओ सभ खाली सड़क पर आबि गेलि। ऋतु मनभावन एवं रौद मद्धिम छलैक। आकाशमे छिड़िआयल मेघ रहैक मुदा बसात तेज चलि रहल छलैक।

"मीना दीदी, ई देखहिन एहिकात पीयर-पीयर फूलक पैघ फुलबाड़ी छैक।''

"धुत ! ओ फुलबाड़ी थोड़े छिऐक ? ओ तँ टाकलाक खेत छिऐक।''

"कोन वस्तुक? यदि ई खेत छिऐक, तँ फूलक गाछ सभ कोना छैक?

"टाकला बहुत उपयोगी वस्तु होइत छैक। एहिमे कतोक औखधक गुण होइत छैक। तेँ ने एकरा खेतमे उपजाओल जाइत छैक। एकरा फूलमे बहुत तेज गंध होइत छैक। ओ खयबामे कड़ू लगैत छैक। मुदा रोगीकेँ एकर फूलक तरकारी पथ्यमे देल जाइत छैक।''

"फूलक तरकारी ?'' स्वातिकेँ आश्चर्य भेलैक।

"हँ ! एतय गाम-घरमे कतोक फूलसभकेँ तरकारीक रूपमे प्रयोग कयल जाइत छैक। अगस्तक फूल, सोहिजनक फूल आदि।''

"यमू, परञ्च स्वातिक बम्बइमे तँ मात्रा एकटा फूलक तरकारी बनैत छैक आ' से छैक कोबीक फूल। छैक ने ?'' गौतमी पुछलकैक। ओकरा चौलपर सभगोटे हँसि पड़लि।

"मुदा मीना, आइ तोहर मौसी तोरा अयबाक आज्ञा कोना देलकौक ?'' यमू पूछि बैसलि।

"ओ तँ नहिये आबय दैत छलि। मुदा हम मौसीकेँ कहुना मना लेने छलहुँ, आ तोँ तथा गौतमी जे संगमे छेँ। हम पातालेश्वर एमहर-ओमहर कतौ दोसर ठाम नहि जायब आ' अन्हार हेबासँ पूर्वे सोझे घर फिरि आयब,—एहि शर्तपर मौसी अयबाक स्वीकृति देलक।''

"एमहर-ओमहर नहि जायब ?''

"एकर की अर्थ ? मात्रा पातालेश्वरक दर्शन कऽ उनटे पयर फिरि आयब ? तखन फेर एहि भेलपुड़ीक कोन काज ?''

"आर कतऽ जाय चाहैत छेँ गौतमी ?"

"मीना, हमरा लोकनि पहिने नीचाँ खाइमे उतरि कऽ पातालेश्वर देखब, फेर ओकर ऊपर धरि जा कऽ झरनाक कातमे बैसि भेलपुड़ी खा कऽ ठंढा पानि पीब... ।"

"अरे नहि, पानि-तानि नहि पीब । पता नहि कतऽक पानि केहेन होइत छैक । एहेन ने होअए जे दुखीते पड़ि जाइ । तेँ ने मौसी ई पानिक बोतल संग कऽ देलक अछि ।" स्वाति बाजलि ।

"एहि बोतलकेँ कनहापर लटकौने रह, ओहि झरनाक पानिसँ केओ दुखित नहि पड़ैत छैक ।" यमू गौतमीक बात कटैत बाजलि ।

"हँ, केओ दुखित किएक पड़त ? प्रत्येक दिन एतय एक गोट बाघ जे पानि पीबाक लेल अबैत छैक... ।"

"बाघ ?" स्वाति चिकरि उठलि, "की हमरा लोकनि ओहि झरना लगमे जायब, जतय प्रत्येक दिन बाघ अबैत छैक ?"

सभ दिन तँ नहि, मुदा यदाकदा अबैत रहैत छैक । ओना ओ आबियो जायत तँ हमरा सभकेँ किछु नहि करत, छै ने गौतमी ?"

"तखन की ? मीना तोरा पता छौक, ओहिदिन हमरा लोकनि टहलैत ओहिना चलि गेल रही, ओहि झरनाक लगमे । एहि पार हम सभ बैसलि रही आ' ओहि पार ओ बाघ । ओ आयल, हमरा सभक दिस तकलक आ पानि पीबि कऽ चुपचाप चल गेल ।"

"हँ ! मीना, हमरा सभकेँ बाबूजी जहिना कहने छलाह, हम सभ ओही तरहेँ चुपचाप बैसलि रहलहुँ । यदि बाघ देखियो पड़य तँ हल्ला नहि करबाक चाही, हाथ मे यदि लाठियो रहय तैयो ओकरा नहि देखेबाक चाही । फेर बाघ बिना किछु केने चुपचाप चलि जाइत छैक ।" यमू विस्तारसँ बाजालि ।

"अच्छा । से बात छैक !"

"एकदम ! ओ खा-पीबि कऽ एतय बस-पानि पीबाक लेलटा अबैत छैक । पानि पीबि कऽ अपन रास्ता चलि जाइत छैक । ओ हमरा सभकेँ किएक किछु करत ? हँ, यदि ओकरासँ केओ छेड़-छाड़ करतैक, तखन ओ अवश्य..."

"बाघक संग छेड-छाड़ ...राम राम !" मीना सिहरैत बाजलि ।

"हमर मीना दीदी तँ एके नमहर फानमे तेरह फीट धरि कूदि जाइत अछि । बाघतँ बारहे फीट धरि फानि सकैत अछि । मीना दीदी तँ बाघोसेँ तेज अछि । छैक ने ? ओकर मास्टरजी सेहो कहैत छलाह जे ओतँ शेरोकेँ हरा सकैत अछि," स्वाति बहुत गर्वसँ बाजलि ।

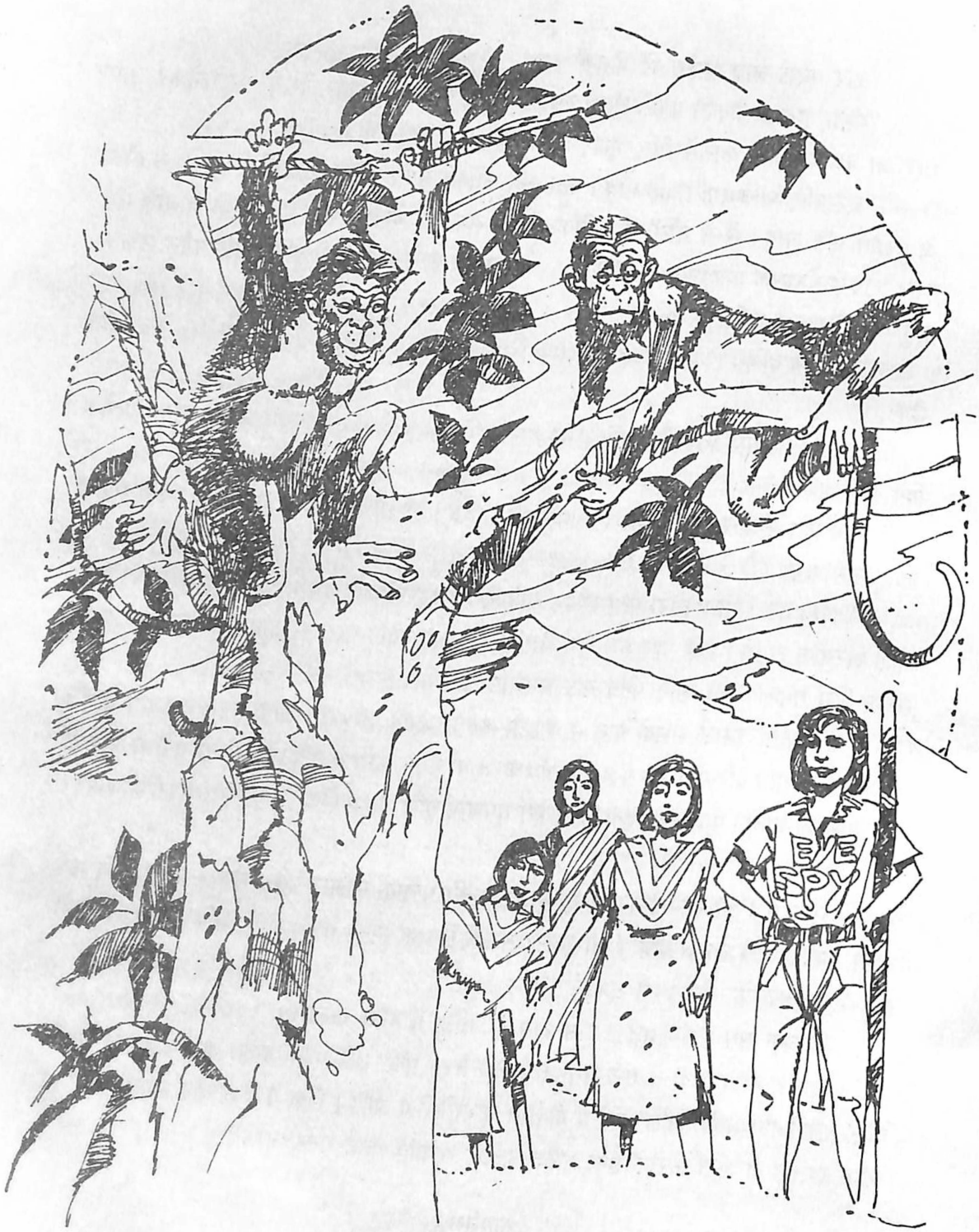
EYE
SPY

"तोरा की होइत छौक जे बाघ हमरासभक संग शर्त लगा कऽ आ' अपन हारि मानि कऽ चुपचाप चल जायत... ।" मीना हँसैत कहि उठलि ।

"आब चुपो तँ रह । हमरा लोकनिकेँ आब पहाड़ी पर चढ़ऽ पड़त । एक पहाड़ी पर चढ़ि कऽ दोसर पर उतरबाक अछि, तखन भेटतौक पातालेश्वर । से छैक ने ?"

गौतमीक कहलाक अनुसार ओ सभ गोटे झटकैत पहाड़ी पर चढ़ब आरंभ कयलक । ओना पहाड़ पर एक पेड़िया तँ बनले छलैक । मुदा तैयो रस्ता टेढ़-मेढ़ छलैक । दुनू कात गाछ सभ बहुत बढ़ल छलैक । ओ चारू गोटे लाठी ओहिपर पटकैत चलि रहल छलि । गाछ सभक पाकल पात सभ नीचाँ खसि पड़ैत छलैक । कतौ खाली जगह भेटैत छलैक तँ ओहि ठाम गाछ सभक डारि सभक बीचसँ सूर्यक दर्शन भऽ जाइत छलैक । पयरक नीचाँ पड़ैत पात सभसँ मरमर...मर आबाज होइत छलैक ।

"मीना दीदी, देखहिन ओहि लुक्खी केँ कोनाकऽ दौड़ैत-दौड़ैत गाछ पर चढ़ि जाइत छैक ।"

"स्वाति, ऊपर देखहिन । आ मीना तो भेलपुरीक पोटरी पर ध्यान रखिहें । हनुमानजीक पौत्र-परपौत्र मौका तकैत रहैत छथि" यमू टिपलक ।

लगपासक गाछसभ पर बहुत बानरसभ छल । गाछक डारि सभपर लटकल ओ नाम-नाम नाङड़ि । बानरसभ गरदनि टेढ़ कयने ओहि चारू गोटे दिस टक-टक ताकि रहल छल । पहाड़ीक तीन-चौठाइ ओसभ पार कऽ चुकल छलि ।

"माँ गै...मीना दीदी... ।

"की भेलौक स्वाति ?"

"देखहिन तँ ! हमरा पयरमे जलन भऽ रहल अछि आ' संगहि कुड़िआइतो अछि, ओह..."

"हँ, तोहर पयर तँ लाल भऽ गेलौक अछि । आ फुलियो गेलौक अछि । अचानक ई की भऽ गेलौक? लगैत छौक जेना किछु काटि लेलकौक अछि, साँप तँ ने छलैक ?" मीना डेराइत स्वातिक पयरकेँ अपना हाथमे लैत बाजलि ।

"आस्तिक आस्तिक कारी डोरा...आस्तिक आस्तिक कारी डोरा ।"

"की कहैत छिहीन यमू ?"

"किछु नहि, साँपक कटलापर हमर माँ दू बेर एहिना कहैत छैक, से हमहूँ कहि देलियौक अछि ।"

"ओह...माँ..." कहैत स्वाति पलथा मारि कऽ बैसि गेलि । ओ पयरकेँ झाड़ि रहल छलि ।

"ला, हम देखियौक" गौतमी ओकर पयर उठाकऽ अपन कोरामे लेलकैक। फेर ओ यमूसँ कहलकैक, "यमू कनी ओहि गंधराजक झाड़सँ किछु पात लऽ आन।"

यमू ओहि दिस जा कऽ ओकर पात तोड़ऽ लागलि।

"की थिकैक गौतमी ? की एकरा कोनो कीड़ा काटि लेलकैक अछि ?"

"हँ...लगैत तँ ओहिना अछि।"

"की हेतैक ?" मीना कनी-कनी आबाजमे पुछलकैक।

"कोनो खास नहि ! एकरा एकटा कीड़ा काटि लेलकैक अछि। ओकर सूंघ पयरमे गड़ल छैक, आ ओकरे कारणसँ फुलि गेल छैक। गंधराजक पातकेँ मलिक ऽ लगौलासँ ओ सूँघ स्वत: बाहर भऽ जयतैक..."

यमू जे पातसभ अनलक तकरा गौतमी स्वातिक पयरपर खूब जोरसँ मलि देलकैक। ओहि पातसभक संग कीड़ाक कतोक सूंघ पयरसँ बहरा गेलैक। ओहिमहक जलन सेहो कम भऽ गेलैक।

"मीना कनी अपन रूमाल दे तँ..." आ' मीनाक रुमाल गौतमी सभक माथ पर बेराबेरी रगड़ि देलकैक। गौतमीक अपन माथमे बहुत अधिक तेल लागल छलैक, कारण ओकरा माथमे काल्हि बहुत अधिक जलन छलैक। सबहक माथक तेल लगलासँ रुमाल सनबोर भऽ गेलैक। गौत्मी आब ओहि रुमालसँ स्वातिक पयर पर धीर-धीरे मालिश कऽ देलकैक। एहिसँ बचल-खुचल सूंघ सेहो बहार भऽ गेलैक। तकर बाद तुरंत ओ ओहि रुमालकेँ झाड़ी मे फेकि देलकैक। आब स्वातिकेँ बहुत आराम बुझि पड़ैत छलैक। परञ्च एहि चक्करमे ओकर सभक दस-बीस मिनटक समय हाथसँ निकलि गेलैक। अतएव आब बिना किछु बजने-भुकने ओ सभ आगाँक पहाड़ी पर चढ़ब आरंभ कऽ देलक।

ओ सभ जखन लगभग रस्ता पूरा काटि नेने छल कि बरखाक दू चारि गोट मोट-मोट बुन्न ओकरा सभक ऊपर खसि पड़लैक।

"यमू, ई बरखा...आब की करबिहीन ?" मीना चिंतित होइत पुछलकैक।

"अरे ई तँ छोट-छिन बुन्नी पड़लैक अछि बरखा तँ नहि हेतौक, चिंता जुनि कर मीना, ई तँ हल्लुक फूही थिकैक, आयल आ गेल।"

"मीना, ई बसात जे जोरसँ बहि रहल छैक से हमरा सभक लेल बहुत नीक अछि,—खाइमे उतरबाक लेल बसातक संग हम सभ स्वत: बढ़ैत जा रहल छी।"

गौतमी ठीके कहलकैक। नीचाँ उतरबा काल बरिसात ओकरा लोकनिकेँ पर्याप्त सहायता केलकैक। मानू जेना बरिसात अपना पाँखि पर बैसाकऽ ओकरा सभकेँ उड़ौने जाइत छलैक।

जखन ओसभ खाइक अंदर उतरि गेलि तँ ओकरा लोकनिकेँ कारी चट्टानक बीच बसल पातालेश्वर देखि पड़लैक। शांत ओ शीतल ओहि स्थानमे कोनो मंदिर तँ छलैक नहि, मुदा पहाड़ीक प्राकृतिक ढलानसँ स्वत: एक नीक पूजाघरसन बनि गेल छलैक। दहिना दिस जे पारिजातक गाछ छल, तकर डारि सभ भोरे-भोर फूल पसारने छल। ओ उज्जर रंगक फूल सभ आब किछु मुरझा अवश्य गेल छल, मुदा ओकरासँ एखनहुँ बसात सुगंधित छल। ई शांत एवं दिव्य परिवेश कोनो नास्तिको व्यक्ति केँ श्रद्धालु बनयबाक लेल पर्याप्त छल। ओहि चारू बहिनपाक हाथ देवता केँ प्रणाम करबाक लेल अनायासे जुड़ि गेलैक। किछु काल धरि केओ किछु नहि बाजलि। पुन: अचानक गौतमी बाजि उठलि-

"मीना, परीक्षामे सफलता अथवा अन्य कोनो बातक कामना छौक तँ देवतासँ माङि ले आ तकर बाद झरनाक कात चलब। ओतय जा कऽ पेट-पूजा करबाक आछि।"

गौतमीक गप सुनिते जेना सभकेँ होश आबि गेलैक। पातालेश्वरकेँ पुन: एक बेर प्रणाम कऽ ओ सभ ओतयसँ बिदा भऽ गेलि।

खाइसँ बाहर भऽ दू-तीन फर्लांग आगू बढ़लाक बाद ओ सभ झरनाक कात पहुँचि गेलि। झरना संकीर्ण छल, मात्र आठसँ दस फीट चाकर, आ ओहिमे निर्मल एवं साफ जल बहैत छलैक।

मीना भेलपुड़ीक पोटरी नीचाँ रखलक। स्वाति ओहिमे सँ कागज बहार कयलक। कागतक टुकड़ा सभ बसातेँ उड़ि ने जाय ताहि लेल ओहि पर छोट-छोट पाथरक टुकड़ा राखि देलकैक। यमू सभकेँ भेलपुड़ी परसि देलकैक-आ' सभ गोटे अपन पेट-पूजा प्रारंभ कऽ देलक। पहाड़ीक रस्ता पर चढ़ला आ' उतरलासँ ओ सभ थाकि गेल छलि आ संगहि बहुत भूख लागि गेल छलैक। कनिएँ कालमे सभटा भेलपुड़ी सठि गेलैक। हँसी-ठट्ठा मे गप करैत-करैत थकनी सेहो बिला गेलैक। यमू अपने हिस्सा खा कऽ झरना कात पानि पीबाक लेल चल गेलि। पानि पीबाक लेल ओ झुकले छलि कि ओकरा चुप्पे फिरऽ पड़लैक। पानि मे अपन छाहक संग संग ककरो आनोक छाह देखि पड़लैक। ओ भागि तँ नहि सकलि, मुदा झटकारि कऽ चलि आबि रहल छलि। आपस आबिते ओ सभकेँ चुप रहबाक लेल संकेत कयलकै तथा लगेमे बहैत झरना दिस इशारा केलकैक।

धारीदार देह आ' दू गोट चमकैत आँखिक संग एखन ओ गर्दनि झुका कऽ पानि पीबि रहल छल मुदा कखनहुँ ओ आँखि उठा कऽ सामने ताकियो सकैत छल। ई सभ गोटे स्तब्ध भऽ चुप्पी सधने देखि रहल छलि।

"ठाँय..."

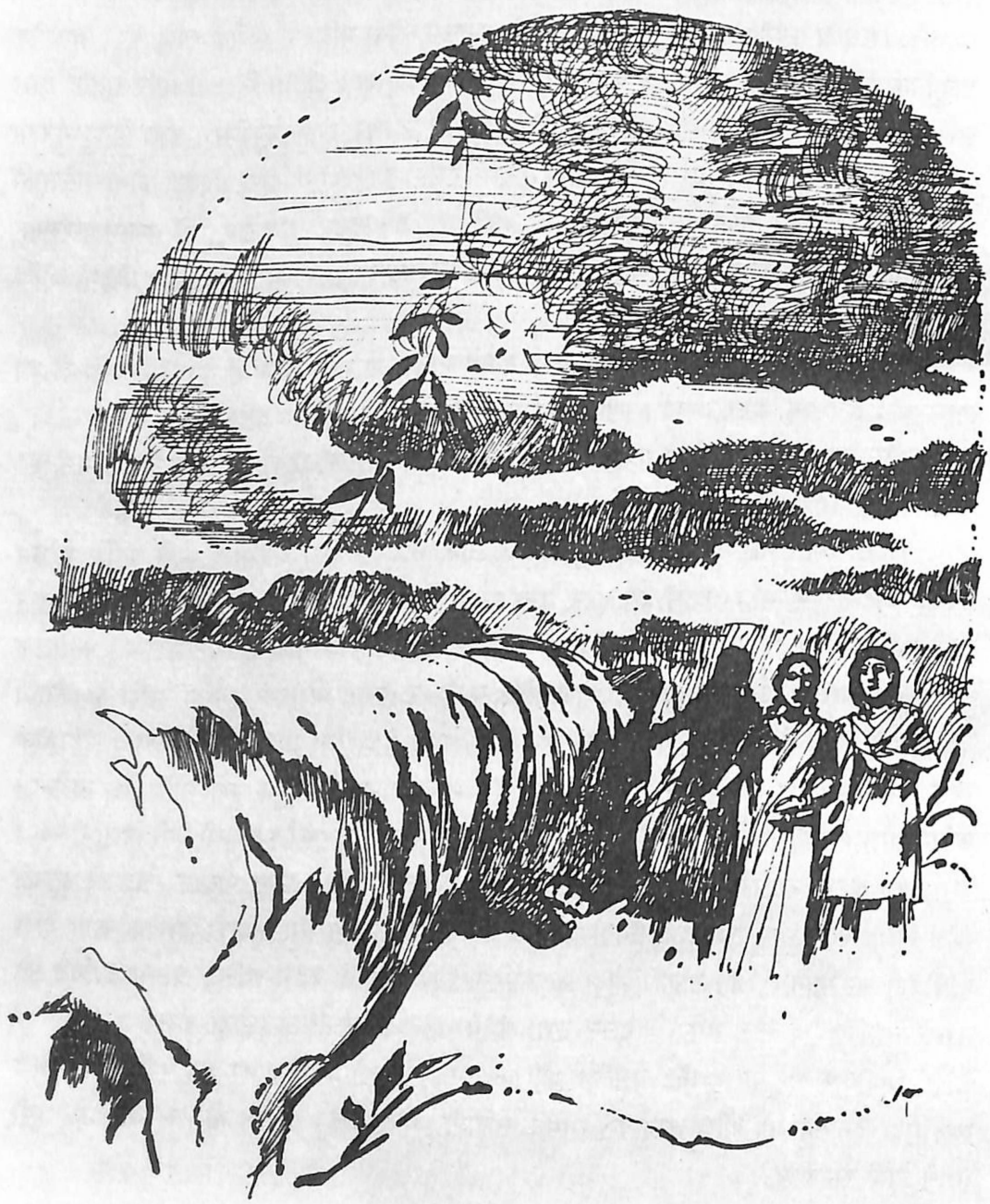

अचानक बन्दूकक गोली चललैक। ओ सभ देखलक जे किछुए फीटक दूरी पर नालाक एही कात कोनो शिकारी हाथ मे बन्दूक नेने ठाढ़ अछि। ओही बन्दूकसँ ओ शिकारी बाघ पर गोली चलौने छल। पानि पर झुकल बाघ किछु हिलल, प्राय: ओकरा गोली लागि गेल छलैक। मुदा ओ छाती तानि कऽ कूदि कऽ शिकारी कें दबोचि लेलक।

बाघ कें एहि तरहें फनैत अबैत देखि ई चारू लड़की घिघिआय लगलैक। घर पर रटाओल गेल ज्ञानक पाठ बिसरि ओ चारू गोटे जकरा जेमहर रास्ता भेटलैक तेमहर अस्त व्यस्त होइत भागि पड़ायलि।

नहि जानि ओकरा सभमेसँ के कतेक कालधरि कोन दिशामे दौड़ैत रहल छलि। सभसँ पहिने गौतमीकें होश अयलैक। आब तँ बरखा सेहो प्रारंभ भऽ गेल छलैक। ऊपर आसमान मेघा छन्न छल आ' बरखा कतय एवं कखन आरंभ भेलैक से पता नहि लगलैक। मुदा जखन गौतमी बीचमे रुकि गेलि तखन ओकरा बुझबा योग्य भेलैक जे ओ पूर्ण रूपेण भीजि गेल अछि।

ओ चारू कात तकलक। नाला, पातालेश्वरक पहाड़ी, खाइ आदि किछु नहि सूझि पड़ैत छलैक। चारू कात मात्र पैघ-पैघ वृक्ष ठाढ़ छलैक। जंगल सघन छल। ओहि गाछ सभक दोग दने ओ सभ देखबाक प्रयास कयलक। किछु जानल-देखल दृष्टिपर नहि अयलैक। एक गोट संकीर्ण एकपेड़िया आगाँ देखलकैक। मुदा गौतमीक अनुभवी आँखि बूझि गेलैक जे ओ अपन रस्ता बिसरि कतेहु दोसर ढाम आबि गेल अछि।

कहाँ रहि गेलि ओ तीनू लड़की, यमू तँ एही इलाकाक छलि। बेर-सबेर अपन रस्ता ताकिए लेत, मुदा मीना ओ स्वाति तँ पूरा तरहें ओकरे पर निर्भर छलैक। कहाँ अछि ओ दुनू ? कतहु ओकरा सभकें बाघ तँ ने... "नहि...नहि", ओ जोरसँ चिकरि उठलि। एक क्षणक लेल ओ दुनू हाथसँ अपन आँखि झाँपि लेलक। ओ जोर-जोरसँ हिचकऽ लागलि।

परञ्च एहि प्रकारक प्राकृतिक विपत्तिसँ ओ एकदम अनजानो तँ नहि छलि। ओ अपनाकें सम्हारलक आ मोनेमोन निश्चय कयलक जे जेना हेतैक ओकरा सभकँ ताकि लेबाक तँ अछिहे। एहि प्रकारें अपन जिम्मेवारीक निर्बाहक हेतु ठानि लेलापर ओ गाछ सभक दोग दने ओकर ठाढ़ि सभकें हाथसँ हटबैत दौड़ऽ लागलि।

"मीना...स्वाति...यमू..." ओ चिकरैत दौड़ि रहलि छलि। आब बरखा सेहो किछु थम्हि गेल छलैक। गौतमी दौड़िते-दौड़िते थाकि गेल छलि। मुदा ओ हारि नहि मानलक। आगू बढ़ैत गेलि। "मीना...स्वाति...यमू"

"गौतमी ..." केओ चिकरि कऽ मेही आबाज मे सोर पाड़ि रहल छलैक। गौतमी ओहि आबाज दिस तकलक। किछुए दूर पर गाछक नीचाँ मे ओकरा दू गोट आकृति बैसल देखि पड़लैक। ओहिमेसँ एक गोटे हाथ उठा कऽ ओकरा बजा रहल छलैक।

"ई तँ मीने थिक..." गौतमी स्वयं बाजि उठलि। आब ओकरामे उत्साह बढ़ि गेल छलैक। ओ दौड़ैत ओहि गाछक नीचाँ पहुँचि गेलि। देखैत अछि जे मीना आ' स्वाति असोथकित भऽ गेल छलि। गौतमी लग अबैत देरी ओ दुनू गोटे ओकरासँ लपटि गेलि।

"यमू कतय अछि?" मीना पुछलकैक।

"हमरा कहाँ भेटल अछि ? हम सभ गोटे पड़ा गेलिऐक आ के कतय रहलैक तकर होश कहाँ रहल। हम तँ तोरा दुनू गोटेक चिंता मे मरि रहल छलहुँ...नीक भेल जे कम सँ कम तोँ दुनू गोटे तँ भेटि गेलेँ।"

गौतमी स्वातिकेँ बुझा तँ रहल छलैक, परञ्च मोनमे ओ स्वयं ई नहि बुझैत छल जे ओकरा सभकेँ की करबाक छैक? बुन्नी एखनहुँ पड़िते छलैक आ किछु सूझि नहि रहल छलैक। लगपासक गाछक झुंडक कारणे अन्हार अधिक सघन लगैत छलैक। एखन सूर्य डूबल नहि छलाह ? मुदा मेघक घटाटोपक कारणे समयक ज्ञान प्राप्त करब कठिन भऽ गेल छलैक।

"यमू कतय हैत ?" मीनाकेँ पुन: यमूक स्मरण भेलैक।

गौतमी की जवाब दौक? ओ गुमसुम बैसल छलि। बुनछेक हेबाक प्रतीक्षामे ओ तीनू गोटे सिहरैत-कँपैत गाछक छाह मे बैसल रहलि।

2

आगाँ की भेलैक

आध-पौन घंटा ओहिना बीति गेलैक। बरखा थम्हि गेलैक। आकाश मे मेघ फाटि गेलैक। रस्ता किछु-किछु सूझऽ लागल छलैक।

"मीना चल, एहि ठामसँ आब चली।"

"मुदा जायब कतय ?"

"हमर बाबा सदत कहैत छथिन जे रस्ता जखन बिसरि जाइ तखन जैह रस्ता सामने मे देखिऐक ओही पर चलि पड़ी। कखनहुँ ने कखनहुँ ठीक रस्ता भेटिए जाइत छैक।"

"तखन फेर चल ! आब तँ तोँ संगमे छेँ, हमरा कोनो बातक आब डर नहि हैत। केवल ई स्वाति..."

"नहि मीना दीदी, आब जखन तोँ आ गौतमी संगमे छेँ, तेँ हमरो डर नहि लागत," स्वाति ढाढ़स बन्हैत बाजलि।

"चल आब चलबे करी" गौतमी बाजलि आ तीनू गोटे एक दोसराक हाथ पकड़ि जंगलसँ होइत ओहि एकपेड़िया पर चलय लागलि।

तीनू गोटेक कपड़ा बरखाक पानिसँ सनगिद्ध भऽ गेल छलैक। ठंढाक कारणसँ ओसम काँपि रहल छलि। गौतमी अपन लहड़ा गाड़ि कऽ पानि निचोड़ि देलकैक, मुद्रा तैयो ओ ओकरा पयर मे सटले रहलैक। मीनाक पैंट ऊनी हेबाक कारणे अधिक भीजल नहि छलैक। मुदा ओकर भीजल 'टी-शर्ट' देह मे चिपकि गेल छलैक। स्वातिक फ्रॉक क सेहो ओहने स्थिति छलैक। ओहि बाटे जेना-तेना जंगलसँ बाहर भऽ जायब ओकरा सबहिक एकमात्र लक्ष्य छलैक।

एहि भ्रमण करबाक लेल चलबाक समय मे जे ई सभ गप-सरक्का मे डूबल छलि, से आब एकदम बन्द भऽ गेल छलैक। एक विचित्र प्रकारक नि:शब्दता पसरि गेल छलैक। बरखाक बन्द

भऽ गेला सँ एक-दू गोट पक्षी-एतयसँ ओतय उड़ि रहल छल। मुदा ओकर पाँखिक फड़फड़ाहटि सुनि पड़ैत छलैक। बीच मे एक गोट कौआ अचानक जोरसँ बाजि उठल, जाहिसँ ओ तीनू बहिनपा चौंकि उठलि।

बहुत काल धरि चललाक बाद जखन जंगल छूटि गेलैक तँ ओ सभ एक फैल सड़क पर आबि गेलि। तीनू गोटे किछु रुकि कऽ दम धयलक। गौतमी एमहर-ओमहर नजरि दौड़ा रहल छलि। अचानक ओकरा अपना सामने मे किछु देखि पड़लैक

"मीना, देखही तँ सामने मे की थिकैक ?"

"कतय ? हँ हँ। एक कुटी सन लगैत छैक।"

"चल ओतय चलि कऽ देखैत छिऐक।"

मुद्रा ई कुटी ककर भऽ सकैत छैक ?"

"ककरो होइक ! हमरा लोकनि ओतय चली आ कनी सुस्ता ली, फेर सोचब जे की करी ? घरक बाट तँ भेटिए जायत। एखन तँ पयर दुखा रहल अछि।"

"हँ मीना दीदी, आब हमरासँ एको डेग चलल नहि हेतौक। गौतमी ठीके कहैत छैक जे हम सभ ओही कुटीमे ठहरि जायब।"

तीनू गोटे कुटी दिस बढऽ लागलि। किछु काल विश्राम करबाक आशासँ ओकर सबहिक जान मे जान अयलैका। तेज चालिसँ झटकैत गौतमी आ' मीना स्वातिकेँ सेहो अपनासंग घिसिया रहल छलि।

तीनू ओहि कुटीक लग जा कऽ ठमकि गेलि। लगपासमे कोनो प्रकारक हलचल नहि बूझि पड़लैक। मात्र एक टा ओ कुटी छल। कुटीकेँ विश्रामघर बनयबाक लेल तत्पर गौतमी सेहो ओतय ठाढ़ि छलि। भीतर जाइ अथवा नहि...एहि दुविधामे ओ पड़ि गेल छलि। ओकर अनुसरण करैत मीना आ स्वाति सेहो चुपचाप ठमकि गेल छलि।

"तो दुनू गोटे बाहरे रुकल रह, हम भीतर झाँकिकऽ देखि लैत छियैक।"

"नहि ! हम तोरा असगर नहि जाय देबौक, हमहूँ तोरा संगें भीतर जाकऽ देखबैक।"

"तखन मीना'दीदी-हम असगरे एतय-कोना रहब ?" स्वाति भनभनायलि।

"ठीक छैक, तखन चल। तीनू गोटे संगे चलैत छी। बाज, एक...दू...तीन..." आब गौतमीक साहस बढ़ि गेल छलैक।

एक दोसराक हाथ पकड़ने तीनू सखी संगहि कुटीमे उपस्थित भऽ गेलि। कुटी मे कोनो द्वार

नहि बनल छलैक। तीन दिस घास-फूस माटि ओ गोबर सँ बनल देबाल अवश्य छलैक। एक दिस ओ पूरा खुजल छलैक, जाहिसँ ओसभ भीतर प्रवेश कयलक।

भीतर गेलाक बाद गौतमी मीना आ स्वाति कें हाथक इशारासँ रुकबाक लेल कहलकैक तथा स्वयं कुटीकें नीक जकाँ देखऽ लागलि । कुटी मे अन्हार छलैक। किछु सुझैत नहि छलैक। ओकर अनुभवी आँखि ओकरा आश्वस्त कऽ देलकैक जे कुटीमे आओर केओ नहि छैक। जखन ओ स्वयं नीक जकाँ विश्वस्त भऽ गेलि तखन मीना आ स्वातिकें आगू बढ़बाक लेल संकेत केलकैक। मीना स्वातिक हाथ पकड़ने आगू बढ़लि। भीतर जाइत देरी गौतमी धम्मसँ कुटीक देबालसँ सटिकऽ बैसि गेलि। स्वाति ओ मीना सेहो ओकर अनुसरण कयलका। आब ओकरा लोकनिकें ठाढ़ रहबाक सामर्थ्य नहि छलैक।

एक दोसराक कनहापर माथ राखि कऽ ओ तीनू किछु कालधरि ओहिना बैसल रहलि। आब बरखा तँ थम्हि गेल छल, मुदा कपड़ा भीजल रहबाक कारणें ओकरा सभकें बहुत जाड़ होइत छलैक। दाँत कटकटा रहल छलैक। एक तँ ठंढा आ दोसर तेजसँ चलबाक कारणें ओकरा सभकें बहुत भूख सेहो लागि गेल छलैक।

"गौतमी, आब की करू ?"

"लगैत अछि जे राति हमरा सभकें एतहि बितबऽ पड़त।"

"राति ? एतहि ?" मीना चिकरि उठलि।

"एहि कुटी मे रातिभरि रहब ? कोना ...?" स्वाति कानऽ लागलि।

"स्वाति, कान नहि, तों तँ नीक लड़की छें ने ? आ' देखही तँ बाहर राति बूझि पडैत छैक ने?"

"राति ? एते समय कोना बीति गेलैक ?"

मीना अन्हारे मे अपन हाथक घड़ी देखबाक प्रयास कयलक। रेडियम रहबाक कारणें समय देखि पड़ैत छलैक । ओना घड़ी मे तखन चारिये बाजल छलैक। एकर अर्थ स्पष्ट छलैक जे भीतर मे पानि चल गेलासँ घड़ी कखन ने बन्द भऽ चुकल छलैक।

एहि घड़ीसँ तों की बुझबिहिक, मीना ? ई अन्हार बरखाक कारणें नहि छैक, राति भेलासँ अन्हार भेलैक आछि। रातिक झिंगुर सेहो बाजि रहल छैक। हँ, राति तँ भैये गेलैक अछि। आब भोरधरि एहि कुटीमें बितबऽ पड़तैक, दोसर कोनो उपाय नहि छैक।

"ठीके छैक। हम नहि डेराइत छी, राति भरिक लेल एही ठाम रुकि जाइत छी," गौतमीक

बात सत्य छैक-से देखि मीनाकेँ अपन कमजोरी पर लाज भऽ गेलैक।

"स्वाति, आब डेरयबाक कोनो बात नहि छैक। इएह बुझि लेजे तोँ एतय स्काउटक शिविर मेआयल छेँ।"

"हम नहि डेराइत छी-हम एतय रहब।"

स्वाति अपनाकेँ बहादुर देखेबाक असफल यत्न कयलक मुदा ओकर आबाज थरथराइत छलैक। ओना ई स्वाभाविको छलैक, कारण अवस्थामे ओ सभसँ छोट छलि। परच्च देखल जाय तँ मीना सेहो अवस्थामे बहुत पैघ नहि छलि। गौतमी ओकर समवयस्क छलैक, आ तेँ ओकरा निडर देखि ओकरो साहस भऽ रहल छलैक।

गौतमी उठि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि, तथा कुटीक भीतर किछु ताकऽ लागलि। अन्हार मे लटपटाइत ओ कटुना आगू बढ़लि। देबालपर हाथ गेलासँ ओकरा भेलैक जे देबालमे एक गोट तक्खा बनल छैक। ओहि पर कोनो वस्तु राखल छैक। ओ ओही वस्तु पर हाथ रखलक आ शीघ्रे बुझि गेलि जे ओ कोनो दीप थिकैक। ओ खुशीसँ चिकरि उठलि।

"मीना, एहि कोन मे एक गोट दीप राखल छैक ।"

"दीप ?"

"हँ, हमरा सभक लेल तँ ई मशाल थिक, मिझायल मशाल। देखैत छिएक जे एकरा बारबाक लेल किछु भेटैत अछि तँ..."

आब मीना सेहो गौतमीक पाछाँ-पाछाँ ओकर आबाजक दिशामे आबऽ लागलि। अचानक ओकर पयर कोनो चीज पर पड़लैक आ कर्रर्र...कर्रर्रक आबाज भेलैक। ओ वस्तु जेना ओकरा पयर तरमे मलायल जा रहल छलैक। ओ चौंकि उठलि। ओकर पयरसँ जे स्पर्श भेलैक, ताहिसँ ई बुझबामे भांगठ नहि रहलैक जे ओ दियासलाइ भऽ सकैत आछि...।

"गौतमी, हमरा बुझने हमर पयर तर जे वस्तु पड़ल अछि ओ दियासलाइक खोल थिक," ई कहैत मीना झुकि कऽ ओकरा उठा लेलका। दू-चारि गोट काठीक संग सियासलाइक खोली अपना हाथ मे लऽ सुंघलक। ओहि मे बारुदक गंध छलैक।

"हँ हँ, गौतमी, ई दियासलाइए छियैक।"

"सलाइ ? लगैछ जेना भगवान हमरा समक आर्त्तनाद सुनि लेलनि। हमरा दीप भेटल आ तोरा सलाइ। एकर अर्थ ई भेल जे आब हमरा लोकनिकेँ अन्हारसँ मुक्ति भेटत। हम ई दीप पकड़ैत छी, तोँ सलाइ बारि दहीन।"

मीना ओ टूटल-बिखरल सलाइ ठीकसँ पकड़लक आ अन्हारेमे जेना-वेना काठी जरौलक।

फर्र सँ काठी जरल मुदा ओ अचानक मिझा गेल। आब ओकरा खूब नीक लागि रहल छलैक। ओ सावधान भऽ दोसर काठी जरौलक। ओहि इजोतमे हाथ मे दीप नेने ठाढ़ि गौतमी स्पष्ट देखि पड़लैक। गौतमी इजोतमे टेढ़ पकड़ल दीपकेँ पकड़लक आ मीना ओकर बाती जरौलक कि दीपसँ एक पैघ लओ निकलल। गौतमी आहि बातीकेँ मद्धिम कयलक। आब कुटीमे किछु-किछु देखि पडऽ लगलैक। स्वाति सेहो तखन ओकरा दुनू गोटेक पाछाँ आबि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। गौतमी दीपक संग आगू बढ़लि आ ओकरा पाछू मीना स्वातिक हाथ पकड़ि कुटीकेँ देखऽ लागलि। गौतमी दीप चारू भर घुमा रहल छलि।

"ओतय..." स्वाति एकाएक चिकरि उठलि।

"की भेलौक ?" मीना चौंकैत पुछलकैक।

"ओ ...ओ...ओ...ओतय...ओहि कोनमे..." स्वाति आब घिघिआय लागलि।

गौतमी आ मीना स्वातिक इशारा करबाक दिस तकलक तँ ओहो दुनू गोटे एकदम चौंकि उठलि। ओहि कोन मे दूगोट आँखि चमकि रहल छलैक तथा हरदिक रंगवला धारीदार देह देखा रहल छलैक।

ओकरा सभकेँ भेलैक जे किछु काल पूर्व देखल बाघ कुटीमे आबि कऽ बैसल अछि। तीनू गोटे पलक मारैत कुटीक बाहर आबि गेलि। बायक झपट्टा मारबाक आशंकासँ सभ काँपि उठल छलि। किछु काल धरि तँ ओ सभ मुरुत बनलि ठाढ़ि रहलि। सामने मे गुजगुज अन्हार छलैक। रातुक कीड़ा सभ बाजि रहल छल। सामने मे दू गोट गुरड़ैत आँखि ओकरा समक दिस ताकि रहल छलैक। गौतमी क हाथ मे जे डिबिया छलैक ओकर मद्धिम इजोत मे किछु स्पष्ट नहि देखि पड़ैत छलैक।

"गौतमी..." मीना ओकरा कान मे फुसयफुसलैक।

"की थिकौक ?" गौतमी सेहो कनिये जोरसँ पुछलकैक।

"हमरा संदेह भऽ रहल आछि।"

"केहेन संदेह ?"

"हमर लोकनि एतेक काल कुटीक भीतर मे छलहुँ, मुदा बाघ हिलबो-डोलबो ने केलकैक। ओ गुरड़बो नहि कयलक। हम सभ अन्हारक कारणेँ ओकरा ठीकसँ नहि देखि सकलियै, परञ्च बाघ तँ अन्हारो मे देखि सकैत छल। ओ हमरा सभकेँ अवश्य देखने हैत।"

"हँ से तँ ठीके ! ई गप तँ हमरा माथ मे अयबे ने कयल।"

"ओ मुइल तँ नहि बुझि पड़ैत अछि ?" स्वाति बाजलि।

"हँ, हमरो सैह बुझि पड़ैत अछि। की ओ ओहि शिकरीक गोली सँ घायल तँ ने भेल छलैक ? भऽ सकैछ जे ओ ओही हालत में दौड़ैत आयल हो आ कुटीमे आबि कऽ दम तोड़ि देने हो।"

"ई भऽ सकैछ मीना। प्राय: एही लेल ओ निष्प्राण देखि पड़ैत अछि तथा ओ ...गुड़इतो ने अछि। चल कनी लग जा कऽ देखैत छिऐक," गौतमी बाजलि।

"लगसँ ? नहि, नहि ...यदि केतौ ओ हमरा सभ पर फानि जाय तखन ?"

"यदि ओ जिबैत रहितय आ ओकरा हमरा सबपर आक्रमण करबाक रहितैक तँ से एतहु कऽ सकैत अछि आ ओतहु। आ तें सैह करत जे ओ चाहैत हैत। हमरा सभक एतय-ओतय रहला संताँ कोनो फरक नहि पड़तैक। आओर यदि देखलासँ ई हैत जे ओ मुइल अछि तँ कम-सँ-कम चिंतासँ मुक्त तँ भऽ जायब", ई कहैत गौतमी डिबिया लऽ कऽ कुटीक दिस मुड़ि गेलि।

मृत्यु अटल होइछ से बुझि गेलापर डर हटि जाइत छैक। मीनाक संग सैह भेलैक।

"अच्छा, तखन चलि क, देखिए लिऐक," से कहैत ओ गौतमीक संग भीतर पैसलि।

"स्वाति तोँ बाहरे मे रुकिजो, " मीना कहलकैक आ' ओ दुनू गोटे दबले पयरेँ धीरे-धीरे जतय बाघ बैसल छल, ओहि दिस बढ़ऽ लागलि।

आब ओकरा दुनू गोटे तथा बाघक बीच बहुत थोड़ दूरी रहि गेल छलैक। एतेक लग भेलोपर बाघ ओही मुद्रा मे बसैल रहल। ई देखि ओ सभ बुझि गेलैक जे बाघ जीवित नहि अछि। आब प्रश्न छल जे यदि ओ मुइल आछि तखन ओ बैसबाक मुद्रा मे कोना अछि ? पड़ल किएक नहि अछि ?

जे होइक, आब ओकरा लोकनिक डर भागि गेल छलैक। अतएव विना अधिक सोचने-विचारने ओ सभ डिबियाक संग बाघ केँ लगसँ देखबाक प्रयास कयलक। मीना अपन श्वास रोकने आँखि पसारि कऽ देखऽ लागलि आ गौतमी जोरसँ ठहाका मारलक।

"गौतमी, की भेलौक ? ओ मुइल छैक ने ?"

"मुइल ? ओ जिबिते कखन छलैक ? गे मीना, ई तँ पाथरक बाघ थिकैक। आब हम सभ बात बुझि गेलियैक।"

"की सभ तोँ बुझलहीक ? " आब मीनाक डर सेहो पड़ा गेल छलैक। पाथरक बाघ थिकैक से सुनि स्वाति सेहो भीतर आबि गेल छलि।

"तखनहि तँ हम सोचैत रही जे एहि निर्जनमे एकमात्र ई कुटी कतयसँ अयलैक ? आ' एतय

ई डिबिया आ सलाइ कोना छैक ? ई बाधतँ हमरा सभ किछु बुझा देलक। हमरा केओ कहने रहय जे ई कुटी सुकड्या आदिवासीक थिकैक।''

''मुदा कोनो आदिवासी एहि तरहेँ असगर कुटी बना कऽ नहि रहैत अछि। ओ सभ तँ अपन ठीक ठाक बसती बसा कऽ रहैत अछि।''

तोँ ठीके कहैत छेँ। एतय ओकरा समक भरल पूरल बस्ती छलैक। परञ्च सरकार ओकरा सबहक लेल कतौ पक्का घर बना कऽ बसा देलकैक अछि। सभ ओतहि चल गेल छैक। मात्र एक सुकड्या टा नहि हटलैक।''

''से किएक ?'' मीना आश्चर्यित होइत पुछलकैक।

''ओ कहलकैक जे हमरा बाप-पितामहक समयसँ ई व्याघ्रेश्वर एहि कुटीमेँ स्थापित छथि। हम हुनका नहि हटेबनि। से करब हमरा लेल उचित नहि हैत। अतएव सुकड्या एहि कुटी केँ ओही हालमे रहऽ देलकैक। दोसर सभ लोक अपन-अपन घर तोड़िकऽ सभ वस्तु-जात लऽ गेल। ओकर कुटी बनल रहलैक आ' ओहीमे ई डिबिया आ सलाइ राखल भेटल। ओ देखहिन चुलहा आ' ओहि मे राखल जारनि,'' गौतमी एक कोन दिस संकेत करैत बाजलि ।

''अरे हँ ! लगैछ जेना सुकड्या ई कुटी हमरे सभक लेल छोड़ने अछि। मुदा ओ राति मे अबैत अछि आ' हमरा लोकनिकेँ कुटीमे पाओत तँ की ओ...''

आब मीनाकेँ एक नव डर घेरलकैक-सुकड्याक।

''अबैत छैक तँ नीके ने। सुनल अछि जे सुकड्या बहुत नीक मनुक्ख अछि। राति बहुत आरामसँ व्यतीत होयत। यदि नहियों आओत तैयो हमरा लोकनि व्याघ्रेश्वरक छत्रछायामे तँ छीहे। हम सभ निश्चिंत सँ राति कुटीमे बिता सकैत छी। आब कोनो चीजक भय नहि रहल,'' गौतमो पूर्ण आश्वस्त होइत बाजलि। मीना तथा स्वाति सेहो निडर भऽ गेल छलि।

खतराक टरि गेलापर ओ तीनू गोटे कुटीमे बैसि गेलि। मुदा तकरा बाद ओ सभ जोरसँ काँपऽ लागलि। सभ कपड़ा-लत्ता भीजल छलैक।

''मीना, एहि डिबियासँ थोड़ेक किरासन तेल बहारकऽ एहि जारनि पर ढ़ारि दहिन। चुलहाकेँ पजारि कऽ हम सभ आगि तापि लैत छी। बहुत ठंढा छैक।''

ओ सभ नीक जकाँ कुटीक सभ स्थान देखि लेलक। एक कोनमे थोड़ेक सुखायल जारनि भेटलैक, ओ ओतय किछु घास-फूस सेहो छलैक, जे ऊपरसँ तँ भीजि गेल छलैक मुदा भीतर सँ सुखायल रहैक। डिबियाक तेलसँ जारनि तथा घास केँ भिजा ओकरा चुल्हिदिस ससारल गेल आ'

Indian Institute of Advanced Study
117113
9.12.04

आगि पजरल। धीरे-धीरे चुल्हा पजरि गेल आ तीनू सहेली लगपास बैसि आगिक धाह मे कपड़ा सुखबऽ लागलि।

देह मे थोड़ेक गर्मी लगलासँ आँखि मे निम्न आबऽ लगलैक। मुदा संगहिं भूखक अनुभव सेहो भेलैक।

"मीना दीदी, बड़ भूख लागि गेल अछि," स्वाति भनभनयलि।

"मीना, ओहि भलेपुड़ीक पोटरी मे किछु..." गौतमी बजैत-बजैत रुकि गेलि। बाघक डर सँ पड़ाइत काल मीनाकेँ भेलपुड़ीक पोटरी कोना मोन रहितैक ?

मीना केँ स्मरण भेलैक जे भेलपुड़ीक पोटरी तँ नदीक कातेमे छुटि गेल छल। ओकर हाथ अनायास अपन जेबी पर गेलैक। जेबीमे कोनो वस्तु छलैक। ओकरा जेबी मे कोन चीज राखल छलैक से ओकरा मोन नहि पड़ैत छलैक। ओ बहार कऽ देखलक। भीतर मे ग्लूकोज बिस्कुटक ओ डिब्बा भेटलैक जे चलबा काल ओकर मौसी जबरदस्ती ओकर जेबी मे ठूँसि देने छलैक।

"गौतमी, देखहिन तँ ! स्वाति आबि जो, तोरा तँ भूख ने लागल छौक ?" मीना बिहुँसैत बाजलि।

"ई कोना भेलैक मीना दीदी ?"

"ई बिस्कुटक डिब्बा घरसँ विदा हेबाक काल मौसी बलजोरी जेबी मे ठूँसि देने छलि।"

मीनाक गर्म पैंट आ प्लास्टिक मे लपेटल रहबाक कारणे बिस्कुट बर्खामे भिजबासेँ बाँचि गेल छल।"

मीना आ' गौतमी दू-दू-टा बिस्कुट खयलक आ' स्वातिकेँ तीन गोट देलकैक। बिस्कुट खयलाक उपरान्त सभकेँ पानिक स्मरण भेलैक।

स्वातिकं कनहापर एखनो धरि पानिक बोतल लटकले छलैक। पहाड़ी पर चढ़बा काल पानिक बोतल केँ खसबासँ बचेबाक लेल पिन लगा कऽ अपना कनहासँ बन्हने छलि। भेलपुड़ी खयलाक बाद प्राय: सभटा पानि समाप्त भऽ गेल छलैक। मुदा तैयो एखनहुँ ओहिमे किछु पानि बचल छलैक, जे एखन ओकरा सभकेँ अमृत जकाँ लागि रहल छलैक।

एमहर ओकरा सभ केँ पियास लागल छलैक ओ दोसर दिस बरखा दोबारा आरंभ भऽ गेल छलैक। मीनाकेँ एक गोट ततबीर सुझलैक। सामनेमे कुटीक छत सँ बरखाक पानिक धार बहैत देखि पड़लैक। ओ लगले अपन पानिक बोतलकेँ ओकरा नीचाँ राखि देलकैक आ' पूरा भरि गेला पर गौतमीसँ कहलकैक, "कनी अपन ओ डिबिया तँ देखा दे।"

"से किएक ? हमतँ ओकरा मिझा देने छिऐक..."

"तौं दे तँ ।" मीना डिबिया हाथ मे लेलक आ चुलहाक आगिसँ बिस्कुटक डिब्बाक कागतकेँ जरौलक तथा ओहि सँ डिबिया लेसि कऽ कुटी मे किछु ताकऽ लागलि। जखन सभ दिस ताकि कऽ ओ व्याघ्रेश्वरक लगमे पहुँचलि तँ ओ सहमि गेलि। व्याघ्रेश्वर पाथरक बनल छलाह, से जानियो कऽ ओकरा डर भऽ रहल छलैक-ओकर अनुमान ठीक साबित भेलैक आ ओकरा ओहि ठाम किछु भेटि गेलैक।

"गौतमी, इएह ले कटोरा। हमरा अपन स्काउट शिविरक स्मरण भऽ गेल। तौं जखन कहलें जे एहि ठाम सुकड्या रहैत छैक तँ हमरा भेल जे एतय एक-आध गोट बर्तन-बासन सेहो हेतैक। ई दू-चारि गोट बिस्कुट आ आँजुर भरि पानिसँ की हैतौक। हम बिचारल अछि जे पेट भरबाक लेल काँजी बना कऽ पीब।"

"काँजी कोन वस्तुसँ बनैत छैक ?"

"ई कटोरा पैघ छैक। बचल-खुचल बिस्कुटकेँ तोड़ि कऽ एहिमे दऽ दही। हम पानिक बोतलक पानि एहिमे मिला दैत छिऐक। ठीक छैक ने ? आ' कटोराकेँ चुलहपर राखि काँजी बना लैत छी।"

बाटी चुलहापर राखल गेल आ' काँजी खदकऽ लागल। काठक चम्मच बना कऽ ओहिसँ चलबैत रहलैक आ' आस्ते-आस्ते ओ गाढ़ भऽ गेलैक। मीना पानिक बोतलेमे काँजी रखलक तथा स्वाति केँ थम्हा देलकैक। भूखलि आ' थाकलि स्वाति पलभारैत सभटा पीबि गेलि। गौतमी केँ हिस्सा देलाक बाद मीना अपन प्याली भरलक। मुद्रा मुहँमे लगबैते ओकरा नीचाँ राखि देलैकक। आब ओकरा बकौर लागि गेलैक।

"मीना दीदी, की भेलौक ?"

"यमू ... कतय होयत यमू ? एतय हमरा लोकनि काँजी पीबि अपन भूख-पियास मेटा रहल छी, तथा एहि कुटीमे सुरक्षित बुझि रहल छी। मुद्रा यमूकेँ की भेल हेतैक ? नहि जानि कोन प्रकारक विपत्ति मे ओ फँसलि होयत ?"

गौतमी सेहो अपन नोर पोछलक। ओकरा अपन सखीक स्मरण बेचैन कऽ रहल छलैक। परंच स्थिति एहेन छलैक जे ओकरा लेल किछु करबामे असमर्थ छलि। ओकर अभाव ओकरा खूब खटकैत छलैक। बाघ देखलाक बादसँ एखन धरि कतोक प्रकारक समस्या समक्ष अयलाक कारणेँ आ' ओकरा लेल निदानक ओरिओओन करबामे ओकरा यमूक स्मरण नहि भेल छलैक। मुदा एखन पेटमे किछु देबाक काल मे यमूक बिना ओकरा किछु नीक नहि लगैत छलैक।

गौतमी सेहो दुखी भऽ उठलि। किछु काल धरि सभ नि:शब्द भऽ गेलि। स्वाति सेहो उदास

भऽ गेल छलि।

"मीना हमरा लोकनि एना करी जे अहलभोरे मे यमू कें तकबाकलेल चलि पड़ी । ओकरा बिना संग लेने गामपर कोना फिरब ?"

"आओर की ? हम चारू कोना आनन्दसँ आयल रही, आ' आब यमूक अभाव कोना सता रहल अछि !"

"हँ ! से तँ ठीके, मुदा हमरा पूर्ण भरोस अछिजे यमू अवश्य भेटि जायत आ' सभतरहेँ कुशल पूर्वक हैत। हमरा लोकनि एहि व्याघ्रेश्वर कें कबुला करैत छियनि। एहि जंगलमे आयल संकटक निवारण करबाक लेल जंगलक देवते ठीक रहताह।"

मीना कें गौतमीक गप ठीक लगलैक। दुनू गोटे व्याघ्रेश्वरक समक्ष आबि हाथ जोड़लक आ मोनेमोन यमूक लेल कबुला कयलक। एहिसँ ओकरा लोकनिकें बहुत आशा बन्हयलैक। यमू भेटि जायत तथा ओ सुरक्षित हैत, से विश्वास जागि गेलैक।

मोन तँ किछु शांत भेलैक, मुदा पेटमे बिलाइ कुदैत छलैक। बचल-खुजल काँजी सेहो ओ सभ पीबि गेल छलि। मीनाक माँ जे ओकर जन्मदिन पर मेबा-मिश्री मिला कऽ ओकरा लेल खीर बनबैत छैक, ताहूसँ कतोक गुना अधिक स्वादिष्ट ई काँजी लगलैक। डेराइत-डेराइत स्वातिकें बहलयबाक हेतु गौतमी बाजलि, "स्वाति, आब पेट तँ भरि गेलौक ने ? आब थोड़ेक लकड़ी ओहि कोनसँ लऽ आन।" स्वातिकें कोनो कार्य मे बझा कऽ ओकरा ध्यान यमू परसँ हटचबाक लेल कहलकैक। स्वातियोक मोनसँ धीरे-धीरे चिंता हटि रहल छलैक।

"की ! आब काँजी रन्हबाक इच्छा छौक ? अथवा किछु आओर सोचलेँहेँ तौँ ?" मोनसँ उदासी-हटि गेलासँ तथा पेट भरि जयबाक कारणे स्वाति आब बहुत उल्लसित बूझि पड़ैत छलि।

"आब की अपन कपार रान्हब।"

"तखन तँ चुल्हिकें मिझा दैत छिऐक। डिबियोमे बहुत तेल छैक, ओकरा बरैत राति भरि छेड़ि दैत छिऐक," मीना बाजि उठलि।

"से एहिसँ तँ हमरा लोकिनक कार्य चलि जायत, मुदा यदि कोनो बाघ-बघेरू आबि जाय तखन?" गौतमी पुछि बैसलि।

"एहि तरहेँ आब किएक डेराइत छेँ ? ई चुल्हि राति भरि जरिते रहतैक। चुलहाक धधरा देखि लगपास मे कोनो जीव-जन्तु नहि अतौक। आगि जानबरक लेल खतराक घंटीक कार्य करैत छैक।"

"अच्छा, से बात छैक ! ठीक छैक, यदि हमरा लोकनि आगि मे धीरे-धीरे लकड़ीक एक-एक टुकड़ी दैत जयबैक तँ राति भरिक लेल एतेक सुखायल लकड़ी पर्याप्त हेतैक।"

किछु कालधरि निस्तब्धताक वातारण रहल। तीनू गोटे बेरा-बेरी एक-एक गोट लकड़ीक टुकड़ी चुल्हि मे दऽ रहल छलैक। अचानक स्वाति कानय लगलैक।

"की भेलौक स्वाती ? ठंढा लागि रहल छौक ?" मीना कें भेलैक जे देहपर भीजल कपड़ा रहबाक कारणे स्वातिकें जाड़ होइत छैक।

"स्वाति, तोँ सभसँ छोट छें। एतय हमरा तीन गोटेक अतिरिक्त केओ आन नहि छैक। आब तोँ अपन भीजल फ्रॉक उतारि ले। भीतर मे शमीज तँ पहिरनहि हेबें ने ? आ' हमरा लग आबि जो। हमर ई चुनरी आब नीक जकाँ सुखा गेलैक अछि। हमरा कोरामे माथ राखि कऽ चुनरी ओढ़ि ले आ' सूति रह।"

स्वाति पहिने तँ नहि-नहि कयलक, मुदा ठंढासँ ओकर स्थिति तेहेने भऽ गेल छलैक जे ओहि काल मे गौतमी ओकरा अपन माँ जकाँ लगलैक । ओ अपन फ्रॉक फोलि लेलक आ सोझे गौतमीक कोरा मे जा कऽ सूति रहलि।

एक-एक लकड़ीक टुकड़ीक आहुतिसँ चुल्हिक आगि पजरल रहल। गौतमी अपन कोरामे सुटकलि- सूतलि स्वातिकें हल्लुक हाथें थपथपबैत सुता रहल छलि। मीना सेहो गौतमीक कनहापर अपन माथ ओङठा देने छलि।

स्वाति तँ गाढ़ निद्रामे सूति रहल, मुदा यमूक चिंता मे गौतमी आ मीनाकें निन्न नहि भऽ रहल छलैक। राति भरि चुल्हिकें पजरल रखबाक छलैक। सुरक्षाक कोनो भरोस नहि छलैक। नमहर राति पहाड़ जकाँ आगू पड़ल छलैक। सूतब कठिन छलैक आ' जागल रहबाक लेल गप-शप करबाक सामर्थ्य सेहो ओकरा सभमे आब बाँचल नहि रहैक। मौन धारण कयने मीना आ गौतमी भरि राति चुल्हिमे लकड़ीक एक-एक टुकड़ी दैत एवं चुल्हिक पीयर धधराकें निहारत बैसल रहलि।

3

इनारसँ आबाज

चुलहाक आगिकेँ पजरैत रखबाक निश्चय कऽ गौतमी आ मीना ओहिमे लकड़ी दैत रहलैक। जगैत आ औंघाइत ओ सभ चुपचाप राति बिता रहल छलि। चारू कात शांत छलैक। लगपास मे कोनो जीवित प्राणीक हेबाक आभास नहि भेलैक। बरखा थम्हल छलैक। रातुक झिंगुर सभ सेहो थाकि कऽ सूति रहल छल। मोनमे उतरैत नि:शब्द स्थिति। कखनहुँ कऽ बसातक एक झोंक कतहुसँ आबि ओहि कुटी मे सोझे घुसि ओहि दुनू सहेलीपर आक्रमण करैक। ओहि झोंक सँ चुल्हिक आगि धधकि उठैक। एहिसँ दुनू गोटे चौंकि पड़ैत छलि। बीच मे कखनहुँ बसातक एक झोंक गाछक झोंझ दने सरसराइत आगू बढ़ि जाइक। ओहि झोंकक संग किछु एहेन विचित्र सन शब्द सुनि पड़ैक जाहिसँ ओहि नि:शब्द रातुक भयावह स्थिति आओरो बढ़ि जाइक। कुटीक भीतर आराम तँ छलैक, मुदा एक विचित्र प्रकारक डेराओन तनाव ओकरा लोकनिक साहस केँ जेना तोड़ि दैत छलैक। आब एक विचित्रसन आबाज सुनि पड़लैक। पयरक शब्द...लग अबैत दौड़ैत डेग।

आबाज दूरसँ आबि रहल छलैक। मुदा ओकर आगू बढ़बाक ढंग ओ दिशासँ स्पष्ट छलैक जे ओ कुटीक लग मे अयबाक संकेत दऽ रहल छलैक।

मीना झटका दैत गौतमीक हाथ पकड़ि ओकरा कान मे फुसफुसायलि–"गौतमी, ओ के भऽ सकैछ ?"

"की पता।" गौतमी सेहो कमे जोरसँ उत्तर देलकैक। आबाज आओरो लग आबि रहल छलैक।

"कतौ ई सुकड्या तँ ने थिक ? ओ तँ एतय कोनो समय मे आबि सकैत अछि।"

"भऽ सकैछ, अबैत हेतैक। मुदा यदि ओ अपन कुटी मे फिरि रहल अछि, तखन तँ ओ स्थिरसँ चलैत अबितय। ई तँ केओ एना दौड़ि रहल अछि जेना पाछूसँ बाघ खेहाड़ि रहल होइक..."

"बाघ ?"

"अरे, ओ तँ हम तेजसँ दौड़बाक संदर्भमे कहने छलिऐक। मुदा लगैत अछि जे ओ सुकड्या

नहि थिक।''

थोड़े काल धरि ओ दुनू गोटे चुप्पे बैसल रहलि। आब कुटीक पाछूसँ डेगक आबाज स्पष्ट सुनि पड़ैत छलैक।

''गौतमी ?''

''ई तँ ने जे केओ हमरा सभकेँ तकबाक लेल आबि रहल अछि?''

''हँ... मुदा...''

''मुदा की ?''

''नाहि, ओ हमरा सभकेँ ताकऽ लेल नहि आयल अछि। कारण ई तँ मात्र एक गोटेक पयरक शब्द थिकैक।''

''से तँ सत्ते। यदि हमरा लोकनिकेँ तकबाक लेल केओ एमहर अबितय तँ ओ असगर नहि रहितय आ सेहो एहि प्रकारेँ दौड़ल किएक अबितय ?''

''अन्हारमे एहि तरहेँ थोड़बे केओ आओत ? जे आओत से टॉर्च अथवा मशाल बारने आओत...आबाज दैत। एहि तरहेँ चुप्पेचाप दौड़ैत केओ किएक आओत ?''

''हँ, तोँ ठीके तँ कहैत छेँ। कतहु कोनो बा...बा...'' मीना बाघक नामो लेबामे हिचकिचा रहल छलि।

''बाघक डेगसँ कतौ आबाज होइक। ई केओ हमरे सब जकाँ भूलल-भटकल अछि...। मीना कतौ ई यमू तँ ने थिक ?''

''मुदा आबाज तँ कुटीक पाछुसँ ने आबि रहल छैक ?''

ओ सभ कान लगा कऽ आहटिकेँ चिन्हबाक यत्न कयलक। आबाज तँ कुटीक पाछुएसँ आबि रहल छलैक।

''गौतमी, यदि ई यमू रहैत तँ कुटी मे इजोत देखि सामनेसँ सोझे आबि जाइत।''

''हमरा तँ विश्वास अछि जे यमू एतय अवश्य आओत। सुनही, आब ओ आबाज आओरो लगमे आबि गेल छैक। अथवा ओ कोनो मनुक्ख नहि, जानवरे होइक।''

''मनुक्ख नहि ...? केहेन जानवर ?''

''यदि जंगलमे भालु दौड़ैत छैक तँ ओकरो आबाज एकदम मनुक्खक दौड़बाक सन सुनि पड़ैत छैक।''

''भालु ? गौतमी, यदि ई भालु थिकैक आ बिना केबाड़क कुटीमे भीतर चल अतैक तखन हम सभ की करबैक ?''

"डेरा नहि। भालु तँ आगिक लगपास मे कोनो हालत मे नहि आबि सकैत अछि। हमरा लोकनि चुपचाप बैसलि रही आ देखिऐक जे की-होइत छैक ?"

फुसुर-फुसुर बन्द भेल, दुनू गोटे ध्यानसँ सूनऽ लागलि आ तखन एकाएक कोनो आबाज सुनि पड़लैक...धम्म।"

"धप् ..." कंठ में जेना किछु अटकि गेल होइक।

"गौतमी, ई ककरो कतहु खसबाक शब्द थिकैक।"

"हँ, अवश्य केओ नीचाँ खसल अछि, जमीन पर नहि पानि मे खसल अछि। ई आबाज निश्चिते ककरो पानि मे खसबाक थिकैक।"

"पानि ? केहेन पानि ? खसबाक लेल पानि एहि ठाम छैके कतय ?"

"नहि, हमर कान हमरा धोखा नहि दऽ सकैछ । हम ई नीक जकाँ जनैत छी जे पानिएँ मे खसबाक शब्द थिकैक। भऽ सकैछ जे कुटीक पाछू मे कोनो इनार होइक। प्राय: ओतय केओ दौड़ैत आयल आ अन्हार मे नहि सुझलैक तथा इनार मे खसि पड़ल।"

"गौतमी, यदि ओ यमू होअए आ ओ इनारमे खसि पड़ल होअए ...तखन ?"

"यदि ओ यमू रहैत तँ इनारमे खसबाक काल अवश्य चिचिया उठितय। मुदा से तँ कोनो आबाज सुनि पड़ल छले।"

गौतमी ओहि आबाज कें स्मरण करबाक यत्न कयलक।

"कनी कनी जोरसँ होइत आबाज तँ हम सुनने छलहुँ। मुदा ओ कोनो मनुक्खक चिचिअयबाक आबाज तँ नहिएँ छल। तैयो यदि ओ यमू हो तखन..."

"मीना, यमू तँ हमरो प्रियगर सहेली अछि, मुदा एहि समयमे हम दुनू गोटे तँ कुटी सँ बाहर जा नहि सकैत छी। कोनो इनार छैक अथवा नहि,–तकरो पता एखन नहि लागि सकैछ। हम सभ तकबो करबैक तँ कतय आ कोना ?" ओहि दुनू गोटे कें लागि तँ रहल छलैक जे ओ यमू थिक परञ्च निश्चित रूपसँ किछु कहल नहि जा सकैत छल। ओतहि सँ बैसल-बैसल हल्ला करबाक अतिरिक्त किछु कैयो तँ नहि सकैत छलि । ओ दुनू गोटे यंत्रवत् चुल्हि मे लकड़ीक टुकड़ी दैत रहलि। कखनहुँ एको क्षणक लेल संचमंच नहि रहनिहारि ई दुनू सहेली मानू मुँह पर ताला लगा कऽ बैसल छलि। खेल-खेलामे ई की सँ की भऽ गेलैक ? साहसपूर्ण यात्रा एक मजाक बनि चुकल छल।

जागल रहबाक पूर्ण प्रयास कयलहुँ पर ओहि दुनू गोटेक आँखि मे निन्न आबऽ लागल छलैक। एक-दोसरसँ लपटि कऽ ओ सभ कखन निन्न पड़ि गेल से बुझियो नहि पड़लैक।

4

यमूक-कथा

सबसँ पहिने गौतमीक आँखि खुजलैक। बरखा थम्हि गेल छलैक। पौ फाटि रहल छलैक। गाछ-वृक्ष पर एक-दू गोट चिड़ै चहकऽ लागल छल। चारू दिस एखनहुँ इजोत साफ नहि भेल छल। गौतमी स्थिरसँ अपना कनहा परसँ मीनाक माथ हटा कऽ देबालसँ सटा देलकैक। ओ उठि कऽ ठाढि भऽ गेलि। ओकर अनुमान छलैक जे राति मे केओ कुटीक पाछूबला इनार मे खसि पड़ल छल। मुदा निश्चित रूपसँ किछु बुझि नहि रहल छलि। तैयो, "ओ यमू तँ ने छलि ?"—से आशंका मीना कें बैचैन कऽ रहल छलैक।

ओकरा एक बेर तँ भेलैक जे बाहर जा कऽ देखि लितिऐक। मुदा ओकरो साहस आब डोलि गेल छलैक। राति तँ कहुना नीक जकाँ बीत गेल छलैक।। आब कोनो नव जोखिम मोल लेबाक कोन काज—एहनो विचार ओकरा मोन मे घुरियाइत छलैक।

कुटीक अऽढ़सँ, काल्हि राति जेमहरसँ आवाज आयल छलैक ओहि दिस तकलक, मुदा ओ एकदमसँ चिचिया उठलि। ओकर चिचिआयब सुनि मीना ओ स्वाति हड़बड़ाकऽ जागि गेल तथा गौतमीक संग ठाढ भऽ कऽ देखऽ लागलि। मद्धिम प्रकाशमे कुटीक पाछू पन्द्रह-बीस फीटक दूरी पर चारू पयर पर चलैत किछु देखि पड़लैक। बीच-बीच मे नेङराइत बुझि पड़ैत छलैक। कखनहुँ ओ ठेहुनियों दैत कोनो शिशु जकाँ बुझि पड़ैत छल, तँ कखनहुँ लड़खड़ाइत खसैत-पडैत छल। परञ्च ओ थिकैक की—से एखनहुँ धरि स्पष्ट नहि भऽ रहल छलैक। अपन श्वास रोकने कुटीक अऽढ़सँ ओकरा देखि रहल छलैक।

किछु कालक उपरान्त ओ आकृति लागल जे मनुक्ख जकाँ अपन दुनू पयर पर ठाढ़ भऽ गेल अछि। आब एतेक तँ ओ बुझिए गेलैक जे ओ आकृति कोनो जानबर नहि मनुक्ख थिक। गौतमी बाजलि,—"मीना लगैत अछि जे ओ कोनो मनुक्खे थिकैक।"

"हँ ! चल, बाहर चलि कऽ देखिऐक।"

तीनू गोटे कुटीसँ बाहर भऽ गेलि। भोरुक धुंधमे एखन किछु स्पष्ट नहि देखि पड़ैत छलैक। बरखा थम्हलाक बादे बिजली छिटकलैक अकि स्वाति चिकरि उठलि, "यमू ..."

ताबत गौतमी आ मीना सेहो ओकरा चिन्हि लेने छलैक। ओ तीनू गोटे यमूक दिस दौड़लि। यमू ओकरा सभक दिस अबैत-अबैत नीचाँ मे बैसि गेलि। ई तीनू गोटे यमूकेँ सोर पाड़ैत ओकरा लग जा रहल छलि।

तीनू मिलि कऽ ओकरा कुटी मे लऽ अनलक। ओकरा जमीन पर सुता देलकैक। मीना ओ गौतमीक आँखि लागि गेलापर चुल्हि मिझा गेल छलैक। डिबिया सँ बचल-खुचल तेल बाहर कऽ लकड़ी पर ढ़ारि गौतमी चुलहा पजारलक। स्वाति ओहिमे लकड़ी दैत रहलैक। स्वातिक भीजल फ्रॉक आब सुखा गेल छलैक। ओकरा आगि पर गरम कऽ कऽ मीना यमूक हाथ पयर सेदऽ लगलैक। आस्ते-आस्ते यमूकेँ होस आबऽ लगलैक। ओ आँखि तकलक। आँखि तकलापर ओ सेदैत मीना केँ देखलकैक, आ' 'मीना' कहैत ओकरा सँ लिपटि गेलि।

मीनाक आँखिसँ नोर झड़ऽ लगलैक। स्वाति सेहो कानऽ लागलि। यमू चारू कात ताकि रहल छलि।

"मीना...तोँ दुनू एतय छेँ आ गौतमी ... गौतमी कतय अछि ?"

मीना देखलकैक जे गौतमी चुल्हा लगसँ उठि गेल छलि। ओ ओतय सँ उठि कऽ कखन चल गेल छलि, तकर कोनो भान मीना केँ नहि भेल छलैक।

आब दिनक प्रकाश भऽ गेल छलैक। स्वातिक डर सेहो समाप्त भऽ गेलैक। ओ गौतमीकेँ तकैत बाहर भेलि।

कुटीक पाछू मे गौतमी जमीन सँ किछु उखाड़ि रहल छलि। स्वाति ओकरा लग मे गेलैक।

"ई की थिकैक गौतमी ?"

"आर्बी, आदिबासी सभ अपन खोपड़ी मे एकरा लगबैत अछि-से हमरा बुझहल छल। तेँ एतय देखऽ अयलिऐक।"

"एकर की करबिहीन।"

"कहबौक, पहिने चल।"

कुटी मे जा कऽ गौतमी बरखाक पानिसँ आर्बी केँ साफसँ धोलक । तकर बाद पाथर पर ओकरा नीक जकाँ थकुचि देलकैक। फेर काँजीक बाटी मे ओकरा पानिक संग आगिपर चढ़ा देलकैक।

"ई हमर यमूक भोजन थिकैक। ओकरा भूख तँ लगले होयतैक ने ?''

"ठीके भूख बहुत जोर लागल अछि।'' थकल आबाज मे यमू उत्तर देलकैक।

"यमू ! मुदा तोँ एहि समय मे एहि तरहेँ अचानक आबि गेलेँ ?''

"इनारसँ बाहर भऽ कऽ।''

"इनारसँ ? ओएह इनार जे एहि कुटीक पाछू मे छैक?''

"हँ।''

"माने काल्हि राति...''

मीनाकेँ पछिला रातुक बात स्मरण भऽ गेलैक

"ओही इनारमे तोँ कूदि पड़ल छलेँ ? से किएक ?''

"कूदि पड़लहुँ ? हम ओहि मे कूदितौं कथी लय ? हम तँ गलतीसँ इनारमे खसि पड़ल छलहुँ।''

"यमू, तोँ इनार मे खसि पड़लेँ, मुदा डुबलेँ नहि ?'' स्वाती अकचकाइत पुछलकैक।

"की हमरा हेलय नहि अबैत अछि ? आब सुन, भेलैक एना जे...''

"रुक, पहिने आर्बी खा ले, तखन कहिहेँ।''

देह सेदलाके बाद आब जाड़ नहि होइत छलैक। सखी-सहेली सभ भेटि गेल छलैक तथा पेटमे सेहो आर्बीक काँजी चल गेल छलैक। तेँ आब यमू पूर्ण स्वस्थ भऽ गेल छलि।

"ओहि बाघ केँ दखि हम सभ गोटे पड़ा गेल छलहुँ ने ... ओकर बाद दौड़ैत-दौड़ैत हम बहुत दूर चल गेलहुँ। हमरा होइत छल जे बाघ हमरा सामनेसँ देखने अछि। ओ हमरा अवश्य खेहारत। हम तोरा सभ दिस देखलिऔक नहि। मात्रा जोरसँ भागैत गेलहुँ ...। बरखामे भिझैत-तितैत जंगलमे रास्ता बनबैत दौड़ैत रही।''

"हम सभ तोरा किएक नहि देखलियौक...'' मीना पुछलकैक

"हमरा लगैत अछि जे हम तोरा समक उनटा दिशा मे दौड़ैत रही। बहुत काल धरि दौड़ैत दूर चल गेलाक बाद हम अचानक एक गोट मंदिर देखलियैक। मंदिरक भीतर पूजा घर मे हम बैसि गेलहुँ। बहुत काल धरि हम चुपचाप ओतय बैसल रहलहुँ। तकर बाद जखन देखलियैक जे बाघ कतौ नहि छैक, तखन प्राण बचबाक आशा भेल। बिचारलहुँ जे मंदिर सँ बाहर भऽ आब देखियैक जे हम कतय आबि गेल छी। ओहि समय मे अन्हरिया व्याप्त छलैक तथा हमरा तोँ सभ मोन पड़य लगलेँ। तोहूँ सभ भागैत-भागैत कतौ एही सभ मे हेबे तँ भेट होयत-ई सोचैत मंदिर सँ बाहर भेले तँ छलहुँ कि...गै माँ।''

ओहि घटनाक मोन पड़ते यमूक रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेलैक।

"की भेलौक यमू ?'' स्वाति डेराइते पुछलकैक।

"हम पूजाक घर सँ बाहर आबिए रहल छलहुँ आ कि देखलियैक जे तीन गोट बेस नाम-चाकर कारी-खुज्झा मनुक्ख मंदिरक बाहरमे ठाढ़ छैका कथा-खिस्सामे हमसभ जाहि चोर-डाकू विषय मे पढ़ैत छी, ओ सभ ठीक ओहने छलैक। हम फेर पूजाक घर क अन्हार कोन मे बैसि गेलहुँ। कोंढ़ धड़कैत रहल। मुदा जतय हम नुकायल छलहुँ, ततय बहुत अन्हार छलैक। हमरा डर भेल जे यदि ओ सभ भगवानफ दर्शन करबाक लेल ओतय आबि कऽ दीप जरा कर हमरा ओतय ओहि हालत मे देखि लिअय तँ...''

गौतमी, स्वाति आ' मीना सभ गोटे खूब ध्यान सँ सुनि रहल छलि, लगैत छलैक जे ओ घटना ओकर सभक आँखिक सामने एखनो घटित भऽ रहल छलैक।

"माँ गै ! फेर ?'' गौतमी पुछलकैक।

"फेर की ? हम तखन मोनेमोन भगवान सँ प्रार्थना कऽ रहल छलहुँ जे हे भगवान, ओकरा सभ कें मंदिर मे अयबाक बुद्धि नहि देबैक आ लागल जेना भगवान हमर प्रार्थना सुनि लेलनि। ओ तीनू गोटे बाहरे मे बैसल रहल। ओ सभ एकटा मशाल बारने छल आ ताहिसँ ओकरा लोकनिक मुँह साफ देखि पड़ैत छलैक। हमर भीतर मे रहबाक पता ओकरा सभकें नहि छलैक। मशालक इजोत मे ओकरा सबहिक कोइला सन कारी एवं भयानक चेहरा ... कपार पर रोलीक टीका.. बाँहि पर उज्जर ताबीज बान्हल... डाँड़ मे चमकैत तलबार आ एक गोटेक पास मे कुरहिर। मशालक प्रककाशमे ओकरा लोकनिक तेज धारबला हथियार चमकि रहल छलैक। लगैत अछि जेना ओ तीनू राति मे कतहु डाका दितैक आ' तकर बाद ओही मंदिर मे अँटकितैक।''

ई सभ बात स्मरण करैत यमू डरसँ सिहरि उठलि।

तखने ओकरा छिक्का भेलैक... "फटाक्...फटाक...''

"हम अपन छीक तक रोकने रही। बरखामे बहुत भीजि गेलाक कारणे जोर-जोर सँ छीक अबैत छल। दम सधने नाक बन्द कयने रहलहुँ। मुँहसँ श्वास लैत रही। किछु कालक बाद के, कखन कोना जायत, से सभ निश्चित कऽ ओ तीनू गोटे ओहि ठामसँ चल गेल। हम ओकरा सभहिक उनटा दिशा मे भागि गेलहुँ...''

यमू पछिला रातुक खिस्सा सुना रहल छलैक आ' बाँकी तीनू गोटे मानू ओहि घटना फेरसँ घटैत अनुभव कऽ रहल छलि।

"बरखा थम्हबाक कोनो आशा नहि छलैक। हम ओहिना दौड़ैत रहलहुँ । किछु कालक उपरान्त बरखा रुकि गेलैक। परञ्च एखन धरि चारू कात अन्हार छलैके। ओ अन्हार रातुक कारणसँ छलैक अथवा मेघक कारणे तकर पता नहि लगैत छल। हम तँ केवल दौड़ैत रहलहुँ आ एहि तरहेँ दौड़ैत हमरा कतहु दूर मे आगि धधकैत देखि पड़ल।''

"अरे, ओ तँ हमही सभ चुल्हि जरौने छलियैक। ओ देखैत एतहि आबि जइतँ तखन...'' मीना टिपलक।

"हँ, ई देखि कऽ एक बेर हमरो मोनमे भेल जे ई कोनो कुटी थिकैक आ भीतर मे आगि जरैत छैक। चलि कऽ देखि ली। परञ्च पुन: मोनमे भेल जे कतहु ओहि कुटीमे ओहि डकैत सभक संगी-साथी न होइक। ताहि स्थिति मे तँ दौड़ैत-भगैत रहलहुँ। रातुक सघन अन्हरिया मे हम इनार नहि देखि सकलियैक। हम सोझे ओहिमे खसि पड़लहुँ।''

"तोरा डर नहि भेलौक ?''

"भरि राति इनार मे कोना रहि सकलेँ ?''

"हेलैत-हेलैत थाकि नहि गेलेँ । सम्पूर्ण राति हेलनाइ कोनो साधारण बात छियैक ?''

"हम राति भरि पानि मे रहलहुँ कहाँ ?'' आब मस्तिष्क सँ तनाव हटि गेलाक कारणे यमू थोड़ेक सम्हरि गेल छलि।

"एकर अर्थ ई भेल जे तोँ रातिये में इनारसँ बाहर आबि गेल छलेँ ?''

"नहि, नहि ! राति तँ हम इनारेमे बितौलहुँ, मुदा पानि मे नहि।''

"तकर की अर्थ ? तोँ तँ जेना कोनो पहेली बुझा रहल छेँ। की इनार सुखायल छैक ?''

"नहि, इनारमे पानि छलैक, आ' हम पानिये मे खसलो छलहुँ। ओहिमे खसलाक बाद किछु काल तँ हम किछु सोचिये ने सकलहुँ आ हम पानि मे नीचाँ गँहीरमे जाय लगलहुँ। हमरा नाक ओ मुँहमे पानि भरऽ लागल आ' हमर होस उड़ि गेल। ओना इनारमे हेलबाक आदति हमरा आरंम्भे सेँ रहल अछि। अतएव अपन हाथ-पयर चलबैत किनारमे चल अयलहुँ। दौड़ैत-दौड़ैत तँ हमर कंठ पहिनहि सुखा गेल छल। भिजलाक कारणे जाड़ सेहो होइत छल। ओहि तरहेँ अधिक काल धरि हेलब संभव नहि छल। हम इनारमे चारू दिस पजेबा अथवा पाथर ताकऽ लगलहुँ, जे कतहु कोनो टिकबाक सहारा भेटय तँ ओतय राति बितालेब।''

"इनार मे पजेबा आ' पाथर ?'' स्वाति केँ आश्चर्य भेलैक।

"हँ एहि तरहेँ इनरमे अधिक काल पाथर रहैत छैक से हमरा बुझल छल। हमरा खेतमे

जे इनार छैक, ओहू मे से छैक । हमर परिश्रम सफल भेल। हमरा पैघ सन पाथर हाथ लागल जे बहुत पैघ छलैक आ ओ पानिक ऊपर मे सेहो छलैक। हम जोर लगौलहुँ आ ओहिपर चढ़बामे सफल भेलहुँ। हम ओहि पर पलथा लगा कऽ जेना-तेना बैसि गेलहुँ।''

"मुदा हेलैत-हेलैत तोँ ई सभ कोना कऽ लेलेँ ?''

मीना ओकर प्रशंसा करैत आश्चर्यित होइत पुछलकैक।

"ओ कोनो पैघ बात नहि भेलैक। छोटे अवस्थामे हम इनार मे हेलैत-हेलैत कतोक प्रकारक खेल खेलाइत छलहुँ। अतएव ओकर हमरा अभ्यास अछि। एहि तरहेँ हम सम्पूर्ण राति पाथर पर बैसल रहि गेलहुँ, आ' पौ फटैत इनारक देबाल पकड़ि-पकड़ि कय ऊपर अबि बाहर भऽ गेलहुँ आ' एतय आबि गेलहुँ। ओना ओ इनार कोनो खास गहींरो नहि छैक।''

"बहुत गहींर नहि छलैक ? हे भगवान, तोरा बदलामे जँ हम रहितहुँ, तँ इनार मे खसिते हमर प्राण छुटि जइतय,'' स्वाति बाजि उठलि।

"हम ऊपर तँ आबि गेलहुँ, मुदा तकर बाद लागल जे हमर सम्पूर्ण शक्तिये समाप्त भऽ गेल अछि। दुइयो डेग आगू बढ़ब हमरा लेल कठिन भऽ गेल छल, आ' तेँ हम ठेहुनयाँ दैत चलैत छलहुँ।''

"आ' फेर तोँ बीच मे अपन पयर पर ठाढ़ि भऽ गेलेँ तथा हमरा सभकेँ भेट गेलेँ'', मीना बाजलि।

"सत्ते ! तोरा सभकेँ देखलियौक तँ लागल जे जेना मरि कऽ पुन: जीबि गेलहुँ अछि।'' कहैत-कहैत यमूक आँखि नोरसँ डबडबा गेलैक।

आब चारू सहेली एकदम शांत आ स्तब्ध भऽ बैसल छलि। मुदा काल्हुक आ आजुक शांति एवं निस्तब्धता मे पृथबी आ' आकाशक अंतर छलैक।

पुनः डाकू

आब खूब प्रकाश भऽ गेल छलैक। बरखा सेहो थम्हि गेल छलैक। चिड़ै सभ चुनमुनाय लागल छल। मेघ छँटि गेल छलैक। भगवान भास्करक पीयर किरण सभ तरि पसरि गेल छलैक। सभक मोन प्रसन्न भऽ गेल रहैक।

"मीना आब यमू भेटि गेल अछि। चली, हम सभ आब गाम घरफ बाट ताकी। एहिना गपाष्टक मे लागल रहि जायब तँ पुनः राति आबि जायत..."

गौतमीक मुँहसँ "आजुक रातियो एतहि..." सुनैत मीना तुरंत उठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। यमूकेँ सेदैत सेदैत स्वातिक फ्रॉक सुखा गेल छलैक। ओ ओकरा पहिरा देलकैक। डिबिया, टूटल-बिखरल सलाइ तथा बचल-खुचल सलाइक काठी समेटि कऽ ताख पर राखि देल गेलैक। गौतमी चुल्हि मिझा देलकैक। लकड़ीक टुकड़ी सभ समेटि कऽ राखि देलकैक आ' व्याघ्रेश्वरक समक्ष हाथ जोड़ि ठाढ़ि भऽ गेलि। ओकर अनुकरण करैत मीना सेहो हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि। ओकर अनुकरण करैत मीना सेहो हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ि भेलि।

'हे व्याघ्रेश्वर! अहाँ हमरा सबहिक प्रार्थना सुनलहुँ। अहाँक ई ऋृण हमरा लोकनि कोना चुकायब?"

"सत्ये पातालेश्वर, ई अहींक कृपा थिक जे हमरा लोकनि बचि गेलहुँ," मीना बाजलि।

"ई तोरा लोकनि की सभ कहि रहल छिहिन?" यमू पूछि बैसलि।

"तोँ सभ एहि कुटी मे कोना अयलें? की राति भरि तोरा लोकिन एतहि छलेँ?"

'देख यमू, सभसँ पहिने तँ हम सभ अपन बाट तकैत छी। तोरा ई सभ राम-कथा बाट चलैत-चलैत कहबौक। चल, हमरा लोकनि आब चली," गौतमी आग्रहपूर्वक कहलकैक।

ओ चारू सहेली कुटीसँ बाहर भऽ गेलि। यमूक कहला पर ओ सभ मंदिर दिसक सड़कक

दिशा छोड़ि देलक। सामने मे एक गोट सड़क छलैक, जे छल तँ अनभोआर, मुदा एहि अनभोआर बाट सबहिमेसँ एक गोटक चुनाव करबाक छलैक। ओ सभ अंदाजसँ एक दिसका रस्ता चुनलक आ' ओहि पर चलि पड़ल। आब बरखा बन्द भऽ गेल छलैक। आकाश मे मेघ फाटि गेल छलैक। मंद-मंद बसात बहि रहल छलैक। ओ सभ स्वस्थ मोनसँ चलि रहल छलि। झटकैत ओ सभ गोटे अपनामे गप-सप सेहो कऽ रहल छलि। बाघ देखलाक बाद आ' यमूसँ भेट हेबाक समय धरि जे किछु भेल छैलक, से ओ तीनू गोटे बेराबेरी यमूकेँ सुना देलकैक।

ओ सभ लगभग घंटा भरि चलैत रहलि। जंगल पतरा गेलैक आ' आब रस्तामे एको गोट मुनुक्खसँ भेट नहि भेलैक।

"आब आओर कतेक दूर चलऽ पड़त ?'' मीना पुछलकैक।

"आब गाछ सभ दूर-दूर पर भेटैत अछि तथा बाट सेहो चाकर होइत जा रहल छैक। तेँ लगैत अछि जे हमरा लोकनि शीघ्रे जंगलसँ बाहर भऽ जायब।'' यमू तर्क देलक।

"आब देखहिन ओहि दिस, बामा कात पैघ सड़क देखि पड़ैत छैक। चल ओही परसँ,'' गौतमी केँ चाकर सड़क देखि पड़लैक।

सभ गोटे उत्साहित भऽ गेलि। स्वाति कोनो गीत गुनगुनाय लागलि। जाबत काल धरि कोनो गाम नहि भेटितैक ताबत धरि खतरा नहि टरल छलैक, से ओ जनैत छलि। अतएव तीनू गोटे खूब सावधान भऽ कऽ चलि रहल छलि।

किछु काल आओरो बितलैक। पुन: एकाएक चलैत-चलैत ओ सतर्क भऽ सुनय लागलि।

"गौतमी, तोरो किछु सुनि पड़ैत छौक ? कोनो आबाज ?'' मीना फुसफुसायलि।

"हँ ! ककरो पयरक आहटि बुझि पड़ैछ।''

"ओ डाकू ने फेर अबैत होअए ?'' एखन धरि अपन साहसक वर्णन करैत यमू चौंकि कऽ पुछलकैक।

किछु काल धरि अनिश्चितताक वातावरण रहलैक। आहटि एखनहुँ बहुत दूरसँ आबि रहल छलैक। आब किछु करैये पड़तैक। बड़का सड़क धरि पहुँचबाक लेल जे एकपेड़िया छलैक से ओना बहुत दूर नहि छलैक, मुदा ओतय धरि जयबाक अवसर आब नहि छलैक। गौतमी चारू कात नजरि दौड़ा रहल छलि। एकाएक ओकर दृष्टि तीन-चारि गोट छोट मुदा सघन झोंझ पर पड़लैक।

"चल हमरा लोकनि ओहि झोंझक पाछूमे नुका रहैत छी। बाद मे देखल जयतैत। लग बला झोंझ बहुत ऊँच एवं सघन छैक। हम सभ यदि ओकरा पाछू मे दबकि कऽ बैसि जाइ तँ केओ

देखि नहि सकत।''

चारू गोटे ओहि झोंझमे पाछू जा कऽ नुका रहलि । आस्ते-आस्ते पयरक शब्द लग आबऽ लगलैक तथा गप करबाक फुसफुसाहिट सेहो सुनि पड़ऽ लगलैक। कनी-कनी जोरसँ एक व्यक्ति दोसरकेँ किछु बुझा रहल छलैक।

आब ओ आबाज बहुत लगेमे ओहि गाछ सबहिक पास मे सुनि पड़ैत छलैक। ओ सभ ई सोचि निफिक्र भऽ आबि रहल छल जे एहि समय मे ओहि जंगलमे ओकरा सभकेँ केयो नहि देखतैक। एहि चारि गोट लड़की सभक ओतय उपस्थितिक विषयमेतेँ ओ सभ सोचियो ने सकैत छल। परञ्च गाछक पाछूसँ एकरा सभकेँ ई बुझाबा योग्य भऽ गेल छलैक जे ओ सभ के छल ? यमू डेरा कऽ गौतमीक हाथ पकड़ि लेलकैक। ओ ओकरा लेकनिकेँ चिन्हि गेल छलि। केओ दोसर रहितैक तँ ओकरा होइतैक जे ओ देहाती लोक सभ लकड़ी अनबाक लेल जंगल जा रहल आछि मुदा यमू तँ काल्हिये ओकरा सभकेँ अपन असली रूप मे देखने छलैक। ''ह हँ... वैह. सुकड्या... ओ पोटरी... इनार, काल्हि फेर... सुकड्य.. मेलामे... दू दिन नहि... ओकर इनार... संदेह नहि... ध्यान रखिहेँ... दुनू पोटरी... काल्हि हम जायब... बुझि गेलहिन... कार्य ठीकसँ... ।''

''हँ हँ ... । सभटा बुझि गेलियैक। आब तोँ अपन कार्य करबाक लेल जो आ हमरा हिस्साक कार्य बिना कोनो संदेह केँ हमरा पर छेड़ि दे।''

एही तरहेँ किछु ने किछु गपसप करैत ओ सभ ओहि ठामसँ बढ़ि गेल। लड़की सभ केँ सभ किछु स्पष्ट देखि पड़लैक। ओ सभ डाकू सभ सँ बचबाक लेल स्वास रोकने निशब्द ठाढ़ि छलि। किछुए कालमे ओ डाकू सभ बहुत दूर चल गेल। ओहिमे सँ दू गोटे आगू बढ़ि गेल आ एक गोटे ओही एकपेड़िया पर सुकड्याक कुटी दिस मुड़ल।

एमहर खतरा टरि गेला पर ई चारू बहिनपा नुकेबाक जगह सँ बाहर आयलि। झटकि कऽ आगू बढ़ऽ चाहैत छलि। मुदा मोन मे आशंका रहबाक कारण सँ ओकरा सभक पयर आगू नहि बढ़ि रहल छलैक।

''लगैत अछि जेना दुर्योग एखन धरि-नहि हटल अछि,'' गौतमी बाजलि।

''लगैत छैक जेना गाम फिरैत-फिरैत नहि जानि ककरा-ककरासँ पाला पड़ऽबला अछि।'' ई कहैत मीना गौतमीसँ पुछलकैक,–''की तोरा विश्वास छौक जे इएह हमरा लोकनिक घर जयबाक बाट थिकैक आ, हम सब ठीक दिशा मे आगाँ बढ़ि रहल छी ?'' ओकरा आब बाटोक विषय म संदेह होमऽ लागल छलैक।

"सड़क तँ इएह छियैक आ डाकू सभ गामे दिससँ आबि रहल हैत। लगमे कोनो ने कोनो गाम अवश्ये छैक। यदि ओ दोसरो गाम हेतैक, तँ ओतहि पंचायत-पुलिस थाना सँ मदति माङि अपन घर पहुँचि सकैत छी।'' गौतमी ओकर साहस बढ़ेबाक यत्न कयलक।

एमहर नहि जानि जे यमू की सोचैत छलि जे बाजि उठलि, "गौतमी... तो सुनलहिन नहि, ओ सभ की बजैत छलैक ?''

सुनलिऐक तँ अवश्य, मुदा किछु बुझि नहि सकलियैक। सुकड्या आ दनार... बस इएह दू गोट शब्द बुझलियैक।''

"की एकर अर्थ ई भेलैक जे सुकड्या सेहो एकरे सभक लोक थिकैक ?'' मीना आश्चर्यित होइत पुछलकैक।

"नहि, हमरा से तँ नहि लगैत अछि। हमर अनुमान अछि जे ओ गप सुकड्याक इनारेक विषय मे चलैत छलैक।''

परञ्च ओ जाहि पोटरीक गप कऽ रहल छलैक से की छलैक ? ओकर इनारसँ कोन सरोकार भऽ सकैत छैक ? पोटरी छलैक तँ ओकरा कुटीक मे रखना चाही...'' मीना बाजलि।

"नहि नहि... स्मरण करहिक, ओ की कहैत छलैक ? सुकड्या... मेला... दू दिन... संदेह नहि... हमरा ओकरा सभक फुसफुसायब नीक जकाँ मोन अछि। आब सम्पूर्ण रामकथा बुझबा योग्य भऽ रहल अछि।''

"मुदा बुझबामे की अयलौक से तँ कह।''

"ओ सुनलाहा शब्द सबहिक आधार पर हम अपन अनुमान लगा सकैत छी।''

"सुकड्या मेलामे गेल छैक...आ दू दिन धरि नहि फिरतैक;'' यमू कहलकैक।

"सुकड्या पर केओ संदेह नहि कऽ सकैछ'' गौतमी कें सुझलैक।

"इनारक ओहि गड्ढामे पोटरी राखब आ' बादमे ओकरा निकालि लेब,'' मीना ओहि मे जोड़लक।

"एकर आशय ई भेल जे काल्हि ओ डाकू सभ जे माल लुटने छल, तकर पोटरी आइ सुकड्याक इनारक गड्ढ़ा मे नुका कऽ राखत। सुकड्या मेला गेल छैक आ' दू दिन नहि औतैक। ओहि पर ककरो संदेह नहि हेतैक। आजुक डाकाक लूटिक मालक दोसरो पोटरी अनलापर दुनूकें एके संग रखबा पर विचार कयल जयतैक... तोरा की बुझाइत छौक मीना ?''

"प्राय तोँ ठीके कहि रहल छें । सत्ते, आइ ओ सभ कतय डाका देतैक ?'' सभ गोटे गंभीर

मुद्रा मे इएह सोचऽ लागल छलि।

"नहि... हम काका कें अवश्य कहबनि," यमू फुसफुसायलि।

"काका कें की कहबहुन, यमू ?" मीना पुछलकैक।

"इएह... एहि डाकू सभक रहस्य। काका काल्हि कोनो कार्यवश घर आबऽवला छलाह। हम हुनकासँ कहबनि जे एहू बातक पता लगबथि।"

"कोनो आओरो वस्तुक खोज किएक ? यदि ओ हमरा सभ कें तकबाक लेल आबि जाथि तखन ?"

"काकाजी तँ काल्हिगे राति मे आबऽवला छलथिन। अबिते की हमरे सभक खोज मे बिदा होइतथि ? की हुनका अपन कोने दोसर कार्य नहि छनि ? आ' ओ तँ कोनो पैघ कार्यसँ आबऽवला छलथिन। घर पर ककरो भेट करबाक लेल बजौने छथिन," यमू बाजलि।

"अपन भजीती आ ओकर सहेली सभ कें ताकब कोनो पैघ कार्य नहि छियैक ?" मीना हँसैत बाजलि।

"चुप रह, हमरा पुन: कोनो आबाज सुनि पड़ैत अछि।" गौतमी ई बजैत ओकरा शांत कयलक।

"फेर डाकू ?" यमू डेराइत बाजलि।

"डाकू होइक अथवा आओर केओ। हमरा लोकनिकें कथीक डर अछि ? हम सभ कोनो चोरी केलहुँ अछि ?"

"तखन तोँ ओहि झाड़क पाछाँ मे नुकायल किएक छलें ?"

"ओ तँ अपन जान बचेबाक लेल। एकर अर्थ ई थोड़ेक भेलैक जे हमरा सभ कें ककरोसँ डेरयबाक अछि।"

"ई तँ ठीक छैक गौतमी, मुदा एतय आब नुकाइबला जगहो नहि छैक। चाकर ओ खुलल सड़क छैक आ' काते-काते गाछ-वृक्ष लागल छैक," मीना बाजल।

"अरे, एही झाड़ीक पाछू मे नुका रहब, आब ई हमरा सभक लेल कोनो नव बात तँ रहल नहि," यमू टिपलक।

"श... श... श..." गौतमी ओकरा सभकें चुप रहबाक लेल इशारा कयलकैक।

आब बजबाक आबाज अधिक साफ भऽ गेल छलैक। शब्द सभ तँ ठीकसँ नहि सुनि पड़ैत छलैक, मुदा गप करबाक ढंगसँ लगैत छलैक जे किछु भयावह नहि छैक। आबाजक लग अयलापर ओ चारू सहेली झुरमुटक पाछूमे नुका रहलि।

रोमांच पर रोमांच

आब ओ आबाज आओरो लग आबि गेलैक। दस-बारह गोटेक चलबाक आबाज सुनि पड़ि रहल छलैक। दोसरो दिससँ ओहने शब्द सुनि पड़ैत छलैक। आब नहि जानि की हेतैक ई सोचि ओ चारू लड़की गाछक्र पाछू मे डरसँ थरथर कँपैत ठाढ़ि छलि, आ कि अचानक...

"काका...।'' यमू चिकरि उठलि। दूरसँ देखाइ बलासभ बहुत लगमे आबि गेल छल। सभ मिला कय दस-बारह गोटे छल। किछु बर्दीधारी-पुलिस जबान तथा ओकर संग छलाह यमूक काका–पुलिस इंस्पेक्टर।

यमू दौड़ि कऽ अपन काका लग जा कऽ हुनकासँ लपटि गेलि।

काका ओकरा अचंभित होइत देखिते रहि गेलाह। हुनका ई बुझबा योग्य नहि होइत छलनि जे ई लड़की एहि तरहेँ अचानक कतऽसँ प्रकट भऽ गेलि।

"यमू बेटी तोँ।''

"काका...'' यमूक मुँहसँ शब्द बहार नहि भऽ रहल छलैक।

"आ' तोहर संगी सभ कतऽ छौक ?''

"काका एहि झुरमुटक पाछू मे...'' यमू गाछ दिस ताकऽ लागलि। झाड़ीक पाछू मे नुकायल लड़की सभ धीर-धीरे बाहर देखय लागल छलि। ओहो सभ यमूक काकाकेँ चिन्हि गेल छलि, मुदा तैयो धीरे-धीरे आगाँ आबि रहल छलि। यमू दौड़ैत ओकर सभक लग मे गेलैक।

"गौतमी, मीना, स्वाति... देख, हमर काका आबि गेल छथि। मीना, तोँ कहैत छलेँ ने ?'' आ' रुकैत ओ पुछलक,–"काका ! अपने ठीके हमरा सभकेँ ताकऽ आयल छी ?''

"हम तोहर गाम कोनो दोसर कार्य सँ आयल छलहुँ, मुदा राति ओतय अबिते तोरा सबहिक हेरा जयबाक समाचार सुनिते हम सभ किछु छोड़ि तोरालोकनिक खोज मे निकलि पड़लहुँ।''

"देख मीना, अपन सभ कार्य छोड़ि काकाजी हमरा सभक पता लगयबाक लेल आबि गेल छभि। हमरा काकाजीकेँ तोरा लोकनि नहि चिन्हैत छहुन।''

"इएह तँ हम तोरासँ पुछऽ चाहैत छियौक जे तोँ हमरा की बुझैत छेँ ? काल्हि रातिसँ हमरा कतेक घुमौलेँ अछि ? कतय छलेँ तोरा लोकनि काल्हिसँ ? हम काल्हि तोरा घर पर गेलहुँ तँ भौजी कहलनि– "बौआ, अपन बर्दी नहि उतारू।' हम पुछलियनि 'से किएक?' तँ कहऽ लगलीह जे यमू आ ओकर सहेली सभ दुपहरिये मे पातालेश्वर गेलैक आ' एखन धरि फिरलैक नहि। यमूक बाप एतय नहि छथिन। मीनाक पित्ती कहऽ लगलथिन जे ओकरा सभकेँ तकबालय जाय पड़त। हमहीं हुनका मना कऽ देलियनि जे अहाँ असगर नहि जाउ, हमर दीयर अबैबला छथि। ओ अबिते तकबाक लेल जयथिन। आ' तखनसँ हम राति भरि अपन जबानक संग सम्पूर्ण पातालेश्वर छनैत रहलहुँ, मुदा तोँ सभ कतौ नहि भेटलेँ। भोरमे नदी कात गेलहुँ तँ ओतय एक मुइल आदमीकेँ देखलियैक।

"कोनो शिकारी,'' यमू बाजलि।

"शिकारी ? हँ तँ हम की कहि रहल छियौक। ओहि आदमी केँ बाघ चीरि-फाड़िकऽ राखि देने छैक। तकर बाद ओ बाघ नदी फानिकऽ दोसर कात चल गेलैक। तकर चेन्ह भेटल अछि। बाघ द्वारा मारल गेल मनुक्खकेँ देखलाक बाद तोरा सभक सुरक्षाक विषयमे आओरो अधिक डेरा गेलहुँ। एमहर छानबीन केनिहार हमरा हबलदारकेँ ई बटुआ भेटलैक जाहिपर मीनाक नाम लिखल छैक।''

"हँ ई तँ भेलपुड़ीवला थिकैक। एकरा हम स्कूल लऽ जाइत छी, तेँ ओहि पर हम अपन नाम लिखने छी''

"ई ओतहि झरनाक कात मे भेटल। मुदा आओर किछु पता नहि लागल। चारू भर अपन जबान सभ केँ पठौलियैक, जंगलक बीत-बीत छनलहुँ, तखन तोँ सभ एतय भेटलेँ।''

एतबामे दोसर दिससँ लगभग अस्सी गोट पुलिसक जबान पहुँचि गेलैक।

"श्रीमान, ओतय जंगलमे कोनो लड़की...'' ई कहैत-कहैत ओकर ध्यान लड़की सभक दिस चल गेलैक।

"भेटि गेलि ?'' ओ सभ पुछलक।

"हँ, इएह सभ थिकैक। आब कह तँ जे तोँ सभ छलेँ कतय ?'' काका पुछलथिन।

"मीना दीदी, हमर पयर एकदम थाकि गेल अछि,'' ई कहैत स्वाति पलथा मारि कऽ जमीन पर बैसि गेलि।

"की काकाजी, हमरा लोकनि किछु काल विश्राम कऽ सकैत छी ? हमरा लोकनि असोथकित भऽ गेल छी।''

"ठीक छैक। हम एही ठाम किछु काल रुकैत छी, जाधब तोँ गाम जा कऽ अपन जीप लऽ आनह। हम एहि लड़की सभक संग एतहि रुकैत छी। आओर कदम, तोहर दल...''

"सुकड्याक इनार दिस...'' यमू काकाजीक अंदाज मे पुलिसदलकेँ कहलकैक।

"मतलब ?''

"हम कहैत छी'' ई कहैत यमू काकाकेँ डाकू सभक सम्पूर्ण योजनाक विषयमे, जे ओ गाछक पाछू मे नुका कऽ सुनने छलि, कहलकनि।

काका कहलाथिन,"से गप छैक ? जकरा खोज मे हम सभ एतय आयल छलहुँ, प्राय: ओ सभ डाकू थिक। जबान सभ, तोरा लोकनि शीघ्र जाह जेना ई कहि रहल अछि, सुकड्याक इनारक गड्ढासँ...''

"काकाजी, सुकड्याक इनार मे पाथरसँ बनल एक गोट खाली जगह छैक। ओही विषय मे आ सभ बजैत छल हैत'', यमू बाजलि।

"मुदा ओहि इनारक सम्बन्धमे तोरा कोना बुझल छौक?'' काका अपन आश्चर्य प्रकट कयलनि।

"एकरा बुझल नहि हेतैक तँ दोसर ककरा हेतैक। काकाजी अहाँक ई भतीजी तँ ओहि गड्ढामे राति बिता कऽ आयल अछि।''

काकासँ भेट भेलाक बादसँ आब ओकरा सभक विपत्ति समाप्त भऽ गेल छलैक। मोन सँ चिंता हटि गेल छलैक आ तँ सम्पूर्ण खिस्सा रुचिगर लगैत छलैक।

"की ?'' काका हड़बड़ा कऽ पुछलथिन। ओ पुन: बजलाह, "चल, जीप अयबाकाल धरि हमरा लोकनि ओहि गाछक छाह मे बैसैत छी। काल्हिसँ तोरा सभ हमरा आँखिक निन्न समाप्त कऽ देने छलेँ। मुदा लगैत अछि जे भरि दिन मे कतोक बहादुरी सँ भरल कार्य सभ भेलैक अछि। से सभ हमरा आब ठीकसँ कह,'' काका प्रशंसा क स्वर मे बजलाह।

"निन्न तँ हमरो सभक आँखिसँ उड़ि गेल छल। हमरा तीनू गोटेक जानपर तेहेन खतरा ने आबि गेल छल जे...'' से कहैत ओ तीनू गोटे आरंभ सँ अन्त धरि अपन समस्त रामकथा काकाकेँ सुना देलकनि। बीच-बीच मे स्वाति अपन टिप्पणी जौड़ैत छलि।

लड़की सभ अपन कथा सुनबैत रहलि तथा काका ओ हुनकर सभ सहकर्मी ओ सुनि कऽ अचंभित भऽ उठलाह। एहि छोट अवस्था मे नहि जानि ओ सभ कोन-कोन विपत्ति मे फँसल छलि।

"अवसर भेटला पर लड़की सभ सेहो एहि प्रकारक जोखिम उठा सकैत अछि। मुदा ओकरा सभक साहस पर सर्वदा संदेह कयल जाइत रहलैक अछि।'' –मीना जेना सभक मुँहक बात छिनैत बाजलि।

"काकाजी, अहाँ आबो कहबैक जे लड़की डरपोक होइत अछि?''

"की मजाल जे केओ एना बाजत ?'' काका कहलथिन।

"काकाजी, यदि अहाँकेँ ओहि पोटरी मे पर्याप्त धन भेटत तँ हमरा सभकेँ इनाम दिया देब...''

"सभटा धन अहाँ लऽ लेब ? मुदा यमूकेँ किछु इनाम अवश्य भेटबाक चाही।'' गौतमी अपन विचार प्रकट कयलक।

"केवल यमूकेँ नहि, तोरा सभ गोटेकेँ इनाम अवश्य भेटतौक। परञ्च पहिने तोरा लोकनि केँ एहि साहसपूर्ण कार्यक लेल शौर्य-पदक भेटबाक चाही। की कदम, की बिचार छह ?''

"ठीके कहल गेलैक श्रीमान्। एहि लड़की सभक कथा तँ बहुत रोमांचक छैक।''

जीप एखन धरि आयल नहि छलैक, पता नहि ओकरा अयबामे एतेक विलम्ब किएक भऽ रहल छलैक ? किछु समय एहिना बीति गेलैक। पुन: काका अचानक पुछि बैसलथिन, "अच्छा बेटी सभ ई तँ कह जे कुटीमे जे बाघ छलैक, से यदि पाथरक नहि भऽ असली बाघ रहितैक तखन तोरा लोकनि की करितिहीन ?''

"असली बाघ...।'' मीना सोचऽ लागलि।

"ओहू हालतमे हमरा लोकनि किछु ने किछु... किछु अवश्य करितियैक,'' --गौतमी बाजि उठलि।

"किछु ने किछुक की माने ?''

"काकाजी, हम सभ मिलि कऽ ई मानि कऽ जे ओकरा सभक बीच हमहूँ ओहि...'' यमू कहिये रहल छलैक कि एक गोट कर्कश आबाज ओकरा सभकेँ सुनि पड़लैक। आबाज बहुत दूर सँ आयल छलैक।

ओहि सुनसान जंगलमें चिकरबाक आबाज गूँजि रहल छलैक।

काका तथा लड़की सभक रुचिगर खिस्सा सुनऽबला पुलिसक जबान सभ उठि कऽ ठाढ भऽ जखन ओहि आबाजक विषय मे सोचिये रहल छल कि ओही दिशामे एक गोट आओरो चीत्कार सुनि पड़लैक।

आब ओ चीत्कार कतऽसँ आबि रहल छलैक,-तकरा विषयमे काका अनुमान कयलनि । ओ लोकनि जतय बैसल छलाह तकरा दहिना दिस जे घनगर जंगल छलैक, ओतहिसँ डेढ़ किलोमिटर दूरसँ ओ चीत्कार सुनि पड़ैत छलैक।

"कदम, तोँ दू-तीन जबानक संग हमरा संगे चलह, देखैत छियैक जे बात की छैक'' अपन पेस्तौल सम्हारैत काका बिदा भऽ गेलाह । दू-चारि डेग बढ़लापर देखैत छथि जे हुनका पाछू-पाछू ओ चारू लड़की सेहो आबि रहल अछि।

"अरे, तोँ सभ कतय जारहल छेँ । पता नहि ओतय कोन संकट ठाढ़ छैक। कोनो चक्करमे तोरो लोकनि फँसि जयबेँ तखन...''

"काकाजी, काल्हिसँ हमरा लोकनि नहि जानि कोन-कोन संकट ने सहलहुँ अछि। एक आओरो रहऽ ओ, आ' आब तँ अहूँ हमरा लोकनिक संगमे छी, तखन डर कथीक ?'' चमू बाजलि।

"हमरा लोकनिक थकनी तँ कखन ने मेटा गेल। एतेक कालसँ विश्रामे तँ कऽ रहल छलहुँ। की गौतमी ?'' मीना पूछि बैसलैक।

"आओर की ? जाबत काल धरि जीप नहि अबैत छैक, एतय बैसल बैसल हम सभ की करब ?...''

गौतमीक गप सुनि काका बजलाह, "आब तँ लगैत अछि जे बाघ मारबेक इच्छा अछि। भऽ सकैछ जे काल्हिबला बाघ सँ पुन: भेट भऽ जाय। बहादुरीक प्रमाण प्रत्रा तँ तोरा लोकनि केँ भेटिए चुकल छौक, चल।''

काकाकेँ भेलनि जे ओकरा सभकेँ संग लऽजयबामे कोनो खतरा नहि छैक। सभ गोटे ओहि दिशामे विदा भऽ गेलाह, जेमहरसँ चीत्कारक आबाज सुनि पड़ल छलनि।

बड़का सड़क केँ छोड़ि ओ लोकनि जंगलमे घुसलाह । झाड़ी सभ हुनका लोकनिक उमेद सँ कतोक अधिक सघन छलैक। प्रत्येक दस डेग पर सघन गाछक डारि-पातकेँ हटा-हटा कऽ रस्ता बनबऽ पड़ैत छलैक। काल्हिए सँ जे बिहाड़ि ओ बरखा भेल छलैक, ताहिसँ सुखायल पात सभसँ जमीन आच्छदित छलैक। बरखासँ ओ पात सभ भीजि कऽ लदफद भऽ गेल छलैक। भीजल जमीन आ पात पर पिछड़ि कऽ खसबाक भय निरंतर बनल छलैक।

रस्ताक बीचमे एक गोट सम्पूर्ण गाछ खसि कऽ आधा झुकल पड़ल छलैक ताहिसँ एक मेहराव जकाँ धनुखक आकार मे बनि गेल छलैक। ओकरा ऊपरसँ जयबो लेल बहुत नीचाँ झुकब आवश्यक छलैक। मुदा दोसर कोनो उपाय सेहो नहि छलैक। काका आ' पुलिसक दू गोट जबान ओकर नीचाँ

दने टपि गेलाह। स्वाति आ' यमू सेहो पार भऽ गेलि। आब मीना ओहि मेहराबक तर दने घुसबाक यत्न करिते छलि कि गौतमी ओकर मुँह पर हाथ राखि ओकरा पाछू घीचि लेलकैक। एहिसँ पहिनहि जे ककरो किछु बुझबा योग्य होइतैक, ओ बगलमे ठाढ़ पुलिस जबानक हाथ सँ लाठी छीनि लेलकैक आ' ओहि मेहराब पर जोर-जोर सँ पटकऽ लगलैक।

किछुए काल मे एक गोट भयानक पीयर साँप मेहराब तरसँ नीचा खसि पड़लैक-मुइल।

"आस्तिक आस्तिक कारी डोरा।''

"आस्तिक आस्तिक कारी डोरा,'' यमू तुरंत दोहरौलकैक। "अरे, आबतँ ओ मरि गेल छैक–आबएहि मंत्राक कोन काज छैक ? पहिने कहितिहिन तँ प्रायः ...।''

"मुदा हम ओकरा पहिने देखबे कहाँ केलियैक जे हम ...?''

"अस्तु, रक्ष रहलैक जे एकरा देखि लेलियैक–मीना बहिन। कि झुकिकय मेहराबक नीचा घुसिरहल छलैक, हम ओकरा ऊपरसँ सरसराइत अबैत देखलियैक'', गौतमी बाजलि।

"आओर तोँ ओकरे लगते ठाढ़ि छलें–तेँ ओकरा मारिकय मीनाकेँ बचा लेलहीन।'' काका मुइल साँपकेँ अपना छड़ीसँ उलटि-पुलटि कऽ देखैत बजलाहा गौतमी तथा कदमक प्रहारसँ साँपक मुँह आ' देह छलनीभऽ गेल छलैक, मुदा तैयो ओकर नाड:रि एखनहुँ धरि छटपटा रहल छलैक।

"श्रीमान'', फौजदार कदम जमीनपर पड़ल नामचाकर साँपकेँ देखैत बाजल, "ई लड़कीतँ बहुत बहादुर साबित भलि ! केओ दोसर रहैत तँ साँपकेँ देखैत चिचिया लगिते।''

"फौजदार साहेब ! साँप देखैत नहि छैक, मुदा सुनैत छैक, से हमरा बुझहल छल। तेँ हमरा चिचियेबाक तँ कोनो प्रश्ने नहि छल। परंच मीना अवश्य चिचिया उठिते, आ एही लेल हम ओकर मुँह बन्द कऽ देलियैक। ओ शहरक रहयबाली थिक, ओ की बुझतैक ?'' गौतमी टिपलक।

"कदम, एकरा एहिना एहि डारिपर लटकाकऽ छोड़ि दहक। जाइत काल एतयसँ हमरालोकनि एकरा गामक लोककेँ देखेबाक लेल लऽ जायब,'' काका बजलाह।

"हँ, गामकलोककेँ गौतमीक साहसक परिचय देबाकलेल,'' यमू बाजलि। अपन सहेलीक प्रति गर्वोक्ति ओकरा बातमे साफ झलकैत छलैक।

ओ सभ गोटे आओरो आगू बढ़ल। आब झाड़ी सभ ओतेक झमटगर नहि छलैक आ' बाटक एक दिस तँ जगह बहुत खाली पड़ल छलैक। ओतहि...।

"श्... श्... श्...।'' काका सभकेँ चुप रहबाक संकेत कयलनि। सभ गोटे सामने तकलकैक। ओ दृश्य देखि कऽ एको डेग आगू बढ़ब संभव नहि छलैक। काका यदि चुप रहबाक लेल इशारा

नहियों करितथिन तैयो ककरो मुँह सँ एको शब्द बाहर नहि होइतैक। ओ दृश्य तेहने रोमांचक छलैक। आगाँ मे घमासान युद्व चलि रहल छलैक। बीच-बीच मे ऊपर उठैत कुरहरिक धार चमकैत देखि पड़ैत छलैक आ' फेर जोरगर गुर्राहटि एवं कुरहरिवला हाथ पर आक्रमण।

आब ई स्पष्ट भऽ गेल छल जे बाघ के समक्ष देखि ओ आदमी चिचिया उठल छल आ' अपनाकेँ सम्हारैत अपन कुरहरिसँ बाघ क समाना करब प्रारंभ कयने छल। अपन शिकारसँ चुनौती पाबि बाघ तँ क्रोधसँ आन्हर भऽ गेल छल। ओहि आदमीक देह कोइला सन कारी छलैक। बाघक पीयर धारीदार देह एक दोसरसँ भिड़ैत काल बहुत भयानक लगैत छलैक।

काका आ' कदम अपन-अपन पेस्तौल निकालि अवसरक प्रतीक्षामे छलाह। ओहि संघर्षकबीचमे गोली चलायब सेहो कठिन छलैक। क्रोधांध बाघ तँ पन्द्रहो-बीस गोट आदमी लेल पर्याप्त होइत अछि। ताहि परसँ ओकरा गोली लागल छलैक। ओ घायल भऽ चुकल छल, अतएव ओकर क्रोध बढ़ले जा रहल छलैक।

तखनहि ठा... ट्ठा... ट्ठा...बन्दूकसँ चरि गोट गोली छुटलैक आ बाघ एक पैघ छड़पान मारलक। ओ अपन शिकारकेँ छोड़ि अपन मुँह मोड़ि लेलक। आब ओ हिनका लोकनिक दिस आँखिसँ आगि बहार करैत देखि रहल छल। दूरसँ मुदा हिंसाक भावसँ भरल ओकरा आँखिक चमक देखैवला छल।

ओ धीर-धीरे आगू बढ़ऽ लागल छल। ओतय सभ केओ मुरुत जकाँ ठाढ़ छलाह। संकट अपन पयरसँ हुनकालोकनिक दिस आबि रहल छलनि। ओहि समय मे कोनो हिलडोल करब सेहो खतरासँ भरल छल। आस्ते-आस्ते हुनका लोकनिक दिस अबैत बाघ बहुत आगू आबि कऽ कुदले छल कि—"ठ्ठ''... काकाक पेस्तौलसँ बहरायल गोली सोझे ओकरा कपार मे लगलैक। पाहेनहुँ बाघ केँ चारि गोट गोली लागि चुकल छलैक। मुदा ई गोली अपन कार्य पूरा करबामे निर्णायक भेल। ओ छटपटा कऽ कुदैत नीचा खसि पड़ल। ओकर धारीदार देह किछु काल धरि तड़पैत रहलैक आ' फेर शांत भऽ गेलैक।

काका तैयो सभकेँ ओतहि रुकि जयबाक लेल संकेत कयलनि। अपने आगू बढ़लाह तथा आस्ते आस्ते डेग उठबैत बाघक लग पहुँचलाह। आब हुनका विश्वास भऽ गेलनि जे बाघ मरि गेल अछि।

"कदम।'' ओ सोर पाड़लथिन... बाघ मरि चुकल अछि।''

बाघक मरबाक विषयमे सुनि कऽ सभ केओ आगू बढ़लाह। बाघ मँ जुझैबला आदमी आब जमीन पर पड़ल छल। कदम ओकरा लग मे जा कऽ ओकर नाड़ी देखलनि आ' तुरत ओ हाथ

नीचा में राखि देलथिन ।

"श्रीमान् ई हो मरि गेल अछि ।''

"लगैत अछि जेना ई पोटरी ओतहि छोड़ि आयल अछि ।'' यमू बाजलि ।

"व्याघ्रेश्वर एकरा सजाय देलथिन,'' मीना कहलकैक ।

"एकर की अर्थ ?'' काका पुछलथिन ।

"काकाजी, ई मुइल आदमी ओही डाकू दल मे सँ एक गोट अछि, जे ओतय पोटरी रखबाक लेल गेल छल ।''

"हम तँ ओकरा दूर सँ देखने छलियैक, मुदा ओकरा पीठ परहक कुब्बड़केँ हम बिसरि नहि सकलहुँ अछि, इएह थिक ओ,''गौतमी जमीन सँ सटल ओकर कुब्बडकेँ देखैत बाजलि ।

"हँ, ई ओएह थिक । हमहूँ नीक जकाँ चिन्हैत छियैक,'' मीना बाजलि ।

"ठीके ?''

"जी हँ, एकदम एकरा हम ओहि डाकू सभक संग देखने छलियैक,'' मीना पूर्ण आत्मविश्वासक संग बाजलि ।

"कदम, ई लड़की सभ जेना कहैत अछि,से यदि मानि लेल जाय तँ ई ओहिडाकूक दलमेसँ एक अछि । आब ईहो मरि गेल अछि । जीबित रहैत तँ एकरा अस्पताल पहुँचेबाक धड़फड़ी रहितय, मुदा से बात तँ आब छैक नहि । तत्काल एकरा एतहि पड़ल रहऽ दहक आ' तोँहूँ सभ एतहि रहह । हम एहि दुनू लाशकेँ उठेबाक बन्दोबस्त करैत छी...ताबत काल धरि तोरा लोकनि एतहि रहह ।'' काका लड़की सभक दिस घुमि कऽ कहलथिन, "चलह, आब आपस अपन घर चलैत छी ।''

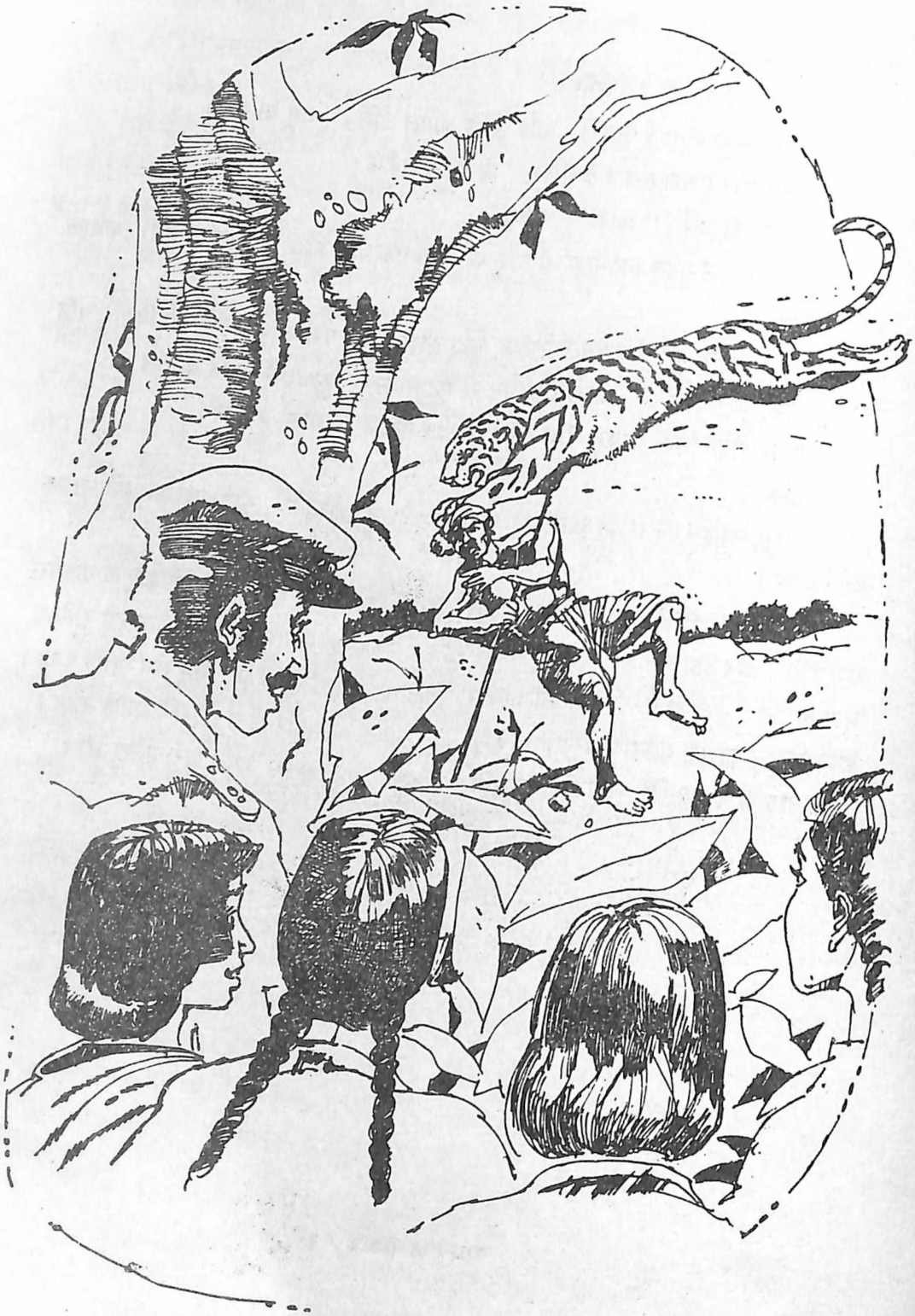

7

साहससँ भरल लड़की सभ

फिरबाकाल किछु समय धरि केओ किछु नहि बाजल। काका अपनहि अचानक बाजि उठलाह—"कदम, यदि ई आदमी जिबैत रहैत तँ दोसरो सभक पता लगायब आसान भऽ जाइत।"

"काकाजी, आब तँ अहाँकेँ हमरा लोकनिकेँ अपना दलमे सम्मिलित कऽ लेना चाही," यमू कहि उठलि।

"से किएक?"

"किएक तँ हमरा लोकनि ओहि डाकू सभक अता-पता जनैत छी, हम सभ अपन बहादुरीतँ देखाइये देलहुँ अछि। की आबो हम सब अहाँक कार्य मे सहयोग देबाक योग्य नहि छी ?"

"अवश्य। मुदा पहिने अपन परिवारक लोक सभसँ पूछि तँ ले। थोड़ेक आओर पैघ भऽ जेबैं तखन सोचबौक एहि विषयमे", काका चुटकी लैत कहलथिन।

"कदम ! ई बचिया सभ जेँ कहैत अछि तेँ ओहि मंदिरक पाछाँ प्रयास करी।"

"जी श्रीमान्। आओर..."

"आओर की ?"

"हम ई कहऽ चाहैत छलहुँ जे एकरा लोकनिक आँखि बहुत तेज छैक आ स्मरणशक्ति सेहो अद्‌भुत छैक। किएक ने हमरा लोकनि ओहि डाकू सभकेँ पकड़लाक बाद ओकरा चिन्हबाक लेल एकरा लोकनिकेँ बजा लियैक ?"

"हँ ! हम सभ ओकरा सभ केँ कतौसँ चिन्हि सकैत छियैक।" लड़की सभ बहुत जोश मे बाजि उठलि। आ' फेर एक बेर स्वाति अचानक चिचिया उठलि। आब ओ सभ ओहि गाछक मेहराब धरि पहुँचि गेल छलि। गौतमी द्वारा किछुकाल पूर्व मारल गेल ओ साँप एखनहुँ ओहि डारिपर लटकल छलैक, ठीक ओहिना, जेना कि ओकरा लटका कऽ छोड़ल गेल छलैक। ओकरा जीबित बूझि स्वाति

डेरा गेल छलि

कदम बगलबला गाछसँ एक गोट नमहर डारि तोड़ि अनलक आ' ओाहि पर साँपकेँ लटकाय लड़की सभसँ कहलक ''पकड़ ।''

डारिक एक छोर गौतमी पकड़लक आ दोसर मीना तथा ओ दुनू गोटे आओर गोटेक संगे आनन्दसँ चलऽ लागलि ।

बाध एवं मनुक्खक मुठभेड़क कारणसँ बहुत विलम्ब भऽ गेल छलैक । बरखा बन्द भऽ गेल रहैक तथा सूर्यक पीयर रंगक किरण सभतरि पसरि गेल छलैक । ओ सभ जखन फिरि कऽ आयल तँ जीप ओकरा लोकनिक प्रतीक्षामे ओतय ठाढ़ छलैक ।

काका कदम केँ किछु सूचना देलथिन । मुइल साँपक धोकड़ी केँ जीपक आगूक भाग मे राखल गेल । लड़की सभसँ काका कहलथिन, ''चल बैसि जो भीतर मे ! कदम, हम एकरा सभक संग जाइत छी, तोरा लोकनि दल मे आबह, हम दोसर जीप पठा दैत छियह ।''

''ठीक छैक श्रीमान् । हम सभकेँ नेने अयबैक ।'' चारू बचिया फटाफट जीपमे बैसि गेलि ।

आब बरखा एकदम समाप्त भऽ गेल छलैक आ' चारू दिस प्रसन्नताक लहरि व्याप्त छल । गरम रौद एवं ठंढा बसातक झोंक । मोनसँ चिंतारूपी मेघ छँटि गेल छल । भरि रीाति जोश मे आबि कऽ ओ सभ जे बाहदुरीक कार्य कयने छलि, तकर थकनी आब निजा रहल छलैक । गप-सप बन्द छलैक तथा सभक आँखि पर निनिया आबि गेल छलैक ।

''जाधव, जीप कनी सम्हरि कऽ हँकिहह, कतौ झटकासँ एकरा सभहिब काँच निन्न ने टुटि जाइक ।''

एक दोसराक कनहापर माथ टेकि सूतल वीरांगना सभकेँ काका अत्यंत ममतापूर्वक देखि रहल छलाह, जे हुनका बहादुर झाँसीक रानी क स्मरण दिया रहल छलनि । केओ किछु बाजि नहि रहल छल । जीप चलबाक शब्दटा मात्रा सुनि पड़ैत छलैक । जीपक आबाज मे काकाकेँ ओहि बचिया सभहिक बहादुरीक प्रतिध्वनि सुनि पड़ैत छलनि । ओहि लड़की सभकेँ एकटक निहारैत ओहि प्रतिध्वनिकेँ अपना कान मे काका भरि लेमय चाहैत छलाह । आओर संगहि मोने मोन कहियो रहल छलाह,–''कतेक साहसी अछि ई लड़की सभ । सत्ते अद्भुत साहसी । जीबटसँ भरलि !''

Indian Institute ... Advanced ...
117113
9·12·04
SHIMLA

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

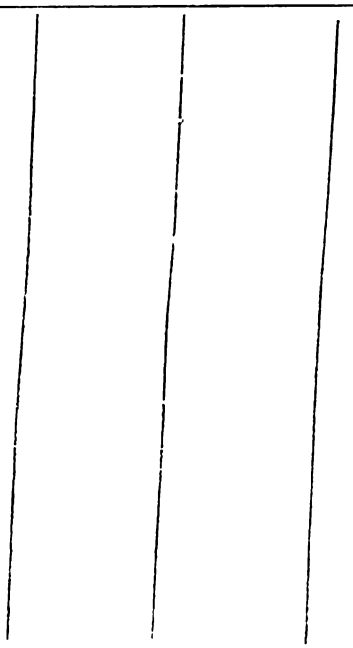

CP&SHPS—519.I.I.A.S./2004-25-6-2004-20000.

'जंगलमे एक राति' चारि गोट बहादुर लड़की—मीना, स्वाति, गौतमी तथा यमुनाक साहसपूर्ण कार्यसँ भरल एकटा रोमांचक कथा-यात्रा थिक। पातालेश्वरक यात्रापर गेल ई चारू लड़की जंगलक अन्हारमे भटकिकऽ एक दोसरसँ बिछुड़ि जाइत अछि। संगहि ओकरालोकनिकेँ जंगली जानवर, भयानक जीव-यन्तु, तथा डाकूक दलसँ सामना करय पड़ैत छैक। गँहीर तथा अन्हार इनारमे रातिभरि पड़ल रहलाक बाद तथा एक आदिवासीक कुटीमे राति बितौलाक उपरान्त, जंगलक आतंक एवं अन्हरियासँ जुझैत ई लड़की सभ एक बेर पुनः आपसमे मिलैत अछि। बादक समस्याक समाधानक लेल एक पुलिस-जवानक दल सेहो ओकरा लोकनिक सहायताक लेल पहुँचि जाइत छैक।

विस्मय, साहस एवं रोमांचसँ भरल एक ई एहन कथा अछि, जाहिसँ कतोक बेर रोइयाँ ठाढ़भऽ जाइत छैक,—आ' तकरा सुना रहल छथि **लीलावती भागवत।**

ISBN 81-260-0306-3

चालीस टका

Rupees 40/-

Library IIAS, Shimla
MT 028.5 B 469 J
00117113